चकमक

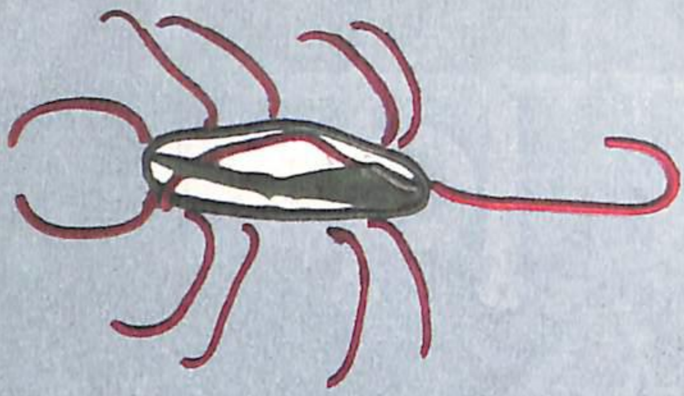
जून, 2005

बाल विज्ञान पत्रिका

रु. 10.00



पक्षियों के दोस्त : सलीम अली



जीवन मीचे, हरणगाँव, म.प्र.



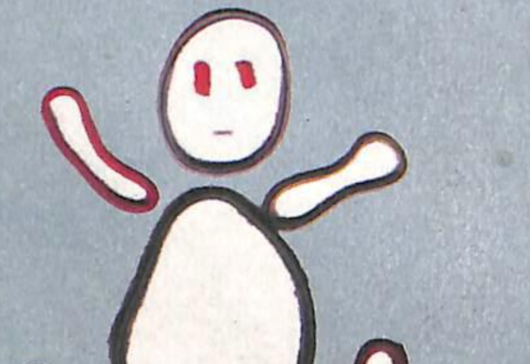
अरविन्द, हरणगाँव, म.प्र.



देवपाल, आठवीं, हरणगाँव, म.प्र.



सचिन श्रीवास, दसवीं, खातेगाँव, म.प्र.



तोफीक शाह, नवमीं, हरणगाँव, म.प्र.



नाम, पता नहीं लिखा



एकलव्य का प्रकाशन

चकमक

बाल विज्ञान पत्रिका

वर्ष - 20. अंक - 11. जून 2005

क्या-क्या है इस अंक में



एकलव्य एक स्वैच्छिक संस्था है जो शिक्षा और जनविज्ञान के क्षेत्रों में कार्यरत है। चकमक, एकलव्य द्वारा प्रकाशित अव्यावसायिक पत्रिका है। चकमक का उद्देश्य बच्चों की स्वाभाविक अभिव्यक्ति, कल्पनाशीलता, कौशल और सोच को स्थानीय परिवेश में विकसित करना है।

इस बार की बात...

दोस्तो,

कैसी बीत रही हैं तुम्हारी छुट्टियाँ। खूब मज़े कर रहे होगे। धमाचौकड़ी और रतजगे। है न! कहीं घूमने फिरने भी गए होगे। यात्राओं और छुट्टियों की इन सभी यादों को तुम चकमक से ज़रूर बाँटना।

जून के इस अंक में तुम्हें कुछ करने धरने के लिए काफी सामग्री होगी। *तुम भी बनाओ* में इस बार तीन चार चीज़ों दे रहे हैं। ऐसे ही *अपनी प्रयोगशाला* के पन्ने भी बढ़ाए हैं। क्या तुम्हें बर्ड वॉचिंग या पक्षी अवलोकन का शौक है? इस बार इसी शौक के लिए मशहूर पक्षी विज्ञानी सालिम अली पर लेख है। इसी लेख के एक हिस्से में पक्षी अवलोकन कैसे करें पर मज़ेदार जानकारी मिलेगी। तुम भी अपने अवलोकन हमें भेज सकते हो। चुनिंदा अवलोकन हम अगले किसी अंक में छापेंगे।

एक महान अभिनेता चार्ली चैपलिन पर कुछ सामग्री है। इस बार हम *पुस्तक अंश* में उनकी जीवनी के अंश दे रहे हैं। उनके बचपन के किस्से। अगर चार्ली के बारे में और जानने का मन करे तो तुम यह किताब भी मँगा सकते हो। कहानी, कविताओं के अलावा एक गुदगुदाने वाली चित्रकथा भी है। कई खोजें ऐसी हैं जो संयोग से हमारे हाथ लगी हैं। ऐसे ही संयोगों की कहानी भी इस अंक में है। इसके अलावा नियमित कॉलम तो हैं ही। अगर *तुम भी बनाओ* या *अपनी प्रयोगशाला* के प्रयोग करते समय कोई मुश्किल आए या कोई गतिविधि तुम न कर पाओ तो हमें ज़रूर लिखना।

उम्मीद है चकमक तुम्हारी छुट्टियों को और मज़ेदार बना पाएगी।

● चकमक

चकमक

मासिक बाल विज्ञान पत्रिका

वर्ष 20 - अंक-11 जून 2005

सम्पादन

विनोद रायना

अंजलि नरोना

शशि सबलोक

सुशील शुक्ल

विज्ञान परामर्श

सुशील जोशी

वितरण

कमल सिंह

अनिल लोखण्डे

मनोज निगम

सहयोग

राकेश खत्री

पत्र/चंदा/रचना भेजने का पता

एकलव्य

ई-7/एचआईजी-453,

अरेरा कॉलोनी,

भोपाल-462 016 (म.प्र.)

फोन - 2463380

eklavyamp@mantrafreenet.com

कवर का कागज़ - यूनीसेफ के सौजन्य से

चंदे की दरें

एक प्रति	:	10.00 रुपए
छमाही	:	50.00 रुपए
वार्षिक	:	100.00 रुपए
दो साल	:	180.00 रुपए
आजीवन	:	1000.00 रुपए

सभी में डाक खर्च हम देंगे।

चंदा, मनीऑर्डर/ड्राफ्ट/चैक से एकलव्य के नाम पर भेजें। भोपाल से बाहर के चैक में बैंक चार्ज 30.00 रुपए अतिरिक्त जोड़ें।

पक्षियों के दोस्त : सालिम अली

सालिम अली का जन्म 12 नवम्बर 1896 को हुआ था। अपने नौ बहन-भाइयों में सालिम सबसे छोटे थे। वे तीन साल के ही थे जब उनके माता-पिता की मृत्यु हो गई। सालिम अली अपने मामू के घर रहने लगे। सालिम मामू के साथ घूमते। आसपास की चीज़ों के बारे में उनसे पूछा करते। मामू को शिकार का शौक तो था ही, वे प्रकृति प्रेमी भी थे। मामू अक्सर तीतर, बटेर, मुर्गियाँ लाते। फिर उन्हें पकाया जाता। सालिम इनमें से कुछ पक्षियों को चुराकर एक पिंजरे में रख लेते। फिर इत्मिनान से उनकी एक-एक हरकत को बड़े ध्यान से देखते। घण्टों उनके व्यवहार के बारे में सोचते रहते। पक्षियों के बारे में ज़्यादा से ज़्यादा जान लेने का उनका मन करता।

उन्हीं दिनों उन्होंने गौरैया को घोंसला बनाते देखा। इस अवलोकन की एक-एक चीज़ अपनी डायरी में लिखी। एक दिन अपनी एयरगन से उन्होंने एक गौरैया मारी। यह आम गौरैया नहीं थी। इस गौरैया के गले के नीचे एक पीली पट्टी थी। सालिम ने उसे मामू को दिखाया। मामू इस पक्षी के बारे में कुछ न बता सके। उन्होंने उन्हें *बॉम्बे नेचुरल हिस्ट्री* नाम की संस्था जाने की सलाह दी।



सालिम अली

वे बहुत संकोच के साथ इस संस्था में पहुँचे। हिम्मत करके वहाँ के निदेशक डब्ल्यू. एस. मिलार्ड से मिले। मिलार्ड ने उस खास तरह की गौरैया के बारे में विस्तार से बताया। इसके अलावा उन्होंने उस संस्था में रखे कई पक्षियों को भी दिखाया। इस वाकये ने उनकी ज़िंदगी बदल डाली। उनके शौक को खूब बढ़ावा दिया। पक्षी देखने का उनका जुनून दिनोंदिन बढ़ता गया।

सालिम ने उन्हीं दिनों तय कर लिया था कि वे बड़े होकर पक्षी विज्ञानी बनेंगे। उन्होंने कई दिन तंगहाली में गुज़ारे। प्राकृतिक इतिहास में नौकरी की तब कोई गुंजाइश ही नहीं होती थी। 1919 में



आखिर उन्हें देश छोड़ना पड़ा। बर्मा (अब म्यांमार) में उनका पुश्तैनी धँधा था। वे खदानों और लकड़ी का काम देखते। इस काम के दौरान उन्हें जंगलों में घूमने के बहुत मौके मिले। उन्होंने बर्मा के मीलों फैले जंगल घूम डाले। तरह-तरह के पक्षी देखे। अपने अवलोकन लिखे। बर्मा में जब उनका धँधा नहीं चल पाया तो वे भारत लौट आए।

भारत में नौकरी की खोज में *जियोलॉजिकल सर्वे ऑफ इण्डिया* गए। लेकिन वहाँ नौकरी पाने के लिए एमएससी या पीएच.डी. होना ज़रूरी था। इसके बाद उन्होंने मुम्बई के एक संग्रहालय में गाइड लेक्चरर की नौकरी की। इस नौकरी में उनका मन न लगा। वे पक्षी अध्ययन के लिए जर्मनी गए। वहाँ उन्होंने मशहूर पक्षी विज्ञानी स्ट्रीजमान से प्रशिक्षण प्राप्त किया। भारत लौटने पर उन्हें एक बार फिर नौकरी के लिए भटकना पड़ा। इस बार उनके दिमाग में एक विचार आया कि क्यों न कुछ ऐसे प्रांतों के पक्षियों के बारे में अध्ययन किया जाए जहाँ के पक्षियों के बारे में लोग अभी तक अनजान थे। वे यह प्रस्ताव लेकर *बॉम्बे नेचुरल हिस्ट्री सोसाइटी* पहुँचे। सोसाइटी ने उनके प्रस्ताव को स्वीकार लिया और वे अपने काम



में जुट गए। वे मानते थे कि पक्षियों का अध्ययन उनके प्राकृतिक रहवासों में ही किया जाना चाहिए। जहाँ पक्षी सहजता से रहते हैं। यहाँ से उनकी घुमक्कड़ी शुरू हुई। वे खूब घूमे - जंगल, बीहड़, पहाड़, नाले, नदियाँ और दुर्गम से दुर्गम जगहें। वे पक्षियों को निहारते रहे। उनकी आदतों के बारे में जानते रहे। लद्दाख के दलदली इलाकों में जाकर उन्होंने महीनों एक विशेष सारस का अध्ययन किया। तब उनकी उम्र अस्सी साल की थी।

पक्षियों पर उन्होंने काफी लिखा। उनकी किताबें बहुत लोकप्रिय हुईं। इनमें से एक किताब *भारतीय पक्षी* बहुत मशहूर हुई। उन दिनों पंडित जवाहरलाल जेल में थे। उन्होंने यह किताब पढ़ने की इच्छा ज़ाहिर की। उन्होंने इसकी एक प्रति अपनी बेटी इंदिरा गाँधी को भी दी।

सालिम अली ने पर्यावरण संरक्षण के लिए भी काफी काम किया। उन्होंने देखा कि हवाई अड्डों के आसपास बूचड़खाने हैं। इसलिए भोजन की तलाश में कई पक्षी वहाँ आते हैं और हवाई जहाज से टकराकर मर जाते हैं। इससे हवाई जहाज़ों को भी काफी नुकसान होता। इसलिए उन्होंने इन बूचड़खानों को कहीं और ले जाने के लिए आवाज़ उठाई। सालिम अली ने हाथियों के संरक्षण के लिए भी प्रयास किए। पक्षियों के अलावा सालिम को तेज़ मोटर-साइकिल चलाना बहुत भाता। वे बेहद दुर्गम जगहों तक में मोटर-साइकिल से पहुँच जाते।

सालिम अली विदेशों में भी काफी लोकप्रिय थे। 1961 की बात है। ब्रिटेन की महारानी एलिज़ाबैथ द्वितीय भारत का दौरा करने वाली थीं। भारत में वे किस-किस से मिलेंगी इस संबंध में लोगों से सलाह मशविरे हो रहे थे। जब मशहूर वैज्ञानिक हाल्देन से सलाह ली गई तो उन्होंने महारानी से कहा कि वे पक्षी विज्ञानी सालिम अली से ज़रूर मिलें।



तिनका-तिनका घर बनता है

सालिम के कुछ अवलोकन



घोंसला बनाने में व्यस्त नर बया

खजूर, बबूल के पेड़ों पर वे बया के घोंसले देखते। कुछ घोंसले पूरे बने होते तो कुछ अधबने। उन्हें बड़ी हैरत होती। उन्होंने महीनों बया का अवलोकन किया। दूर से अवलोकन करना ज़रा मुश्किल काम होता। इन पेड़ों के पास एक मचान बनाई गई। इस मचान पर छिपकर घोंसले पर बारीकी से नज़र रखी जा सकती थी। बया की नज़रों से बचने के लिए सालिम जूट का बड़ा-सा थैला ओढ़ लेते। इन अवलोकनों से बया के बारे में कई बातें पता चलीं।

सालिम ने देखा घोंसला नर बया बनाता है। जब घोंसला आधा या कुछ ज़्यादा बन जाता है तो नर बया पंख फड़फड़ाकर या गाना गाकर मादा बया को रिझाने की कोशिश करता है। इस घोंसले को देखने मादा बया आती हैं। अगर किसी बया को घोंसला पसंद आ जाए तो वह घोंसला पूरा करने में नर बया की मदद करती है। और नर बया के साथ रहने लगती है। उनमें दोस्ती हो जाती है। मादा बया अण्डे देती है। और अपने बच्चों को इसी घोंसले में पालती है। जैसे ही मादा अण्डा देती है नर बया दूसरा घोंसला बनाने में जुट जाता है। अगर किसी भी मादा बया को यह घोंसला पसंद न आए तो नर बया उसे अधबना ही छोड़ देता है। कई बार तो नर बया को कई घोंसले बनाने पड़ते हैं।



मेरा घर, मेरे अण्डे

गौरैया के बारे में भी उन्होंने काफी लिखा। अवलोकन किए। उन्होंने अपनी आत्मकथा का नाम भी *गौरैया का टपकना (फॉल ऑफ द स्पैरो)* रखा। उन्होंने पाया कि मादा गौरैया एक भी दिन नर गौरैया के बिना नहीं रह सकती। सालिम अली ने एक बार एक सप्ताह में मादा गौरैया के आठ नरों को मार डाला। वे देखते कि नर के मरते ही मादा गौरैया तुरंत एक और नर ढूँढ लेती। मादा हमेशा अपने घोंसले को अण्डों या बच्चों से भरा रख़ना चाहती। अगर एक बार उसके घोंसले से अण्डे हटा दिए जाएँ तो वह फिर से अण्डे दे देती। एक बार तो सालिम अली ने कई दिनों तक अण्डे हटाए। और इस प्रयोग में एक मादा गौरैया ने 51 अण्डे तक दिए।



चलो, पक्षी देखने चलते हैं...



बुलबुल



धनेश



नीलकण्ठ



चील

तुम कितने पक्षियों को जानते हो? चलो गिनते हैं ... कौआ, कोयल, नीलकण्ठ, तोता, कबूतर, चील, टिटहरी, उल्लू, सारस, तीतर....। ज़रा ये बताओ कि तुम इन पक्षियों की पहचान कैसे करते हो। चोंच देखकर, रंग देखकर, आकार देखकर, पूँछ देखकर, आवाज़ सुनकर या उड़ान देखकर। पक्षी अवलोकन के लिए एक चीज़ तुम्हारे पास हमेशा होना चाहिए। वह है डायरी। जब भी कोई अनजान पक्षी देखो तो झट से उसका रंगरूप, चोंच, पूँछ, उसकी आवाज़ आदि जानकारियाँ लिख लो। रंग एक और खास पहलू होता है। रंग के बारे में कई बारीकियाँ होती हैं। जैसे पक्षी के शरीर के किस भाग में कौन-सा रंग है। पक्षी का मुख्य रंग कौन-सा है। सीने, पीठ, परों का रंग कैसा है। कुछ पक्षियों के शरीर पर कुछ पैटर्न होते हैं। जब वे बैठे होते हैं तब ये पैटर्न नहीं दिखते। जब पक्षी पँख फैलाकर उड़ते हैं तब ही नज़र आते हैं। अगर तुम्हारे पास समय है तो उस पर नज़र रखे रहो। इससे तुम्हें उसकी आदतों के बारे में भी पता चल सकेगा। इस लिखित जानकारी के आधार पर तुम उस चिड़िया के बारे में और कई बातें किताबों में पढ़ सकते हो। अपने बड़ों से पूछ सकते हो। किताबों में कई पक्षियों के बारे में रोचक जानकारियाँ मिलती हैं। जैसे वे कहाँ रहते हैं। घोंसला कहाँ और कैसे बनाते हैं। वे क्या खाते हैं। वे प्रजनन कैसे करते हैं। क्या वे प्रवास करते हैं। प्रवास के दौरान कहाँ-कहाँ जाते हैं।

पक्षी अवलोकन के समय पक्षी की अनेक खासियतों पर नज़र रखने की कोशिश न करें। इसके बजाए उसकी एक या दो चीज़ों पर ही गौर करें। यह हम तब की बात कर रहे हैं जब आप किसी चिड़िया को पहली बार देख रहे हैं। कहने का मतलब यह कि एक बार में ही चिड़िया की सभी चीज़ों पर ध्यान देने की कोशिश न करें। मान लो तुम्हें कोई चिड़िया दिखी। तुमने नोट किया कि वह चिड़िया मैना के बराबर थी और उसकी टाँगों का रंग लाल था। सिर्फ इन दो चीज़ों से आपको उस पक्षी की पहचान करना आसान होगा।

एक दो बातें और भी ज़रूरी हैं जैसे तुमने कोई चिड़िया कहाँ देखी। ज़मीन पर, किसी ठूँठ पर, तालाब या झील के आसपास, पत्तों के बीच! उस समय वह क्या कर रही थी। चिड़िया की उड़ान का तरीका क्या था। क्या वह किसी परिचित पक्षी की तरह उड़ रही थी। अगर हाँ तो उस पक्षी का नाम नोट कर लें। अगर वह ज़मीन पर थी तो वह कैसे चल या फुदक रही थी। चिड़ियों की आवाज़ उनकी पहचान का एक और तरीका होता है। हम कितनी ही चिड़ियों को सिर्फ उनकी आवाज़ सुनकर पहचान लेते हैं।

एक और बात जो सरसरी तौर पर हमें गैर-ज़रूरी लगेगी पर पक्षियों की पहचान में कारगर होती है। वह है तारीख। तारीख लिख लेने से यह बात पता चल सकती है कि फलाँ चिड़िया प्रवासी चिड़ियों में से एक हो सकती है या नहीं।

तो थोड़े से प्रयासों से पक्षी अवलोकन तुम्हारे लिए बहुत मज़ेदार हो सकता है। तुम्हें उनकी कुछ आम आदतों के बारे में पता लग जाएगा। जैसे उड़ान में बगुला परिवार की पीछे को मुड़ी गर्दन, किलकिला की चोंच, बाजों के सिर और चोंच। पक्षियों का घोंसला भी पक्षियों के



टिटहरी



कठफोड़वा



शकरखोरा



हुदहुद

बारे में जानने का एक अच्छा तरीका हो सकता है। घोंसला देखते समय घोंसला सुरक्षित रहे, इस बात का ध्यान रखना चाहिए। वैसे यह बात सही नहीं है कि पक्षियों के बच्चों को अगर हम छू लें तो वे उन्हें नहीं अपनाते। पर चूँकि वे बहुत नाजुक होते हैं इसलिए उन्हें उठाते समय बहुत सावधानी बरतने की ज़रूरत होती है।

पक्षी अवलोकन के लिए खेत, खलिहान, बाग-बगीचों, झील, ताल-तलैया जैसी खुली जगहें अच्छी होती हैं। अपने आसपास के पेड़ों पर नज़र रखोगे तो भी तुम्हें कई पक्षी नज़र आ जाएँगे। बरगद और पीपल के पेड़ों पर जब फल लगते हैं तो पक्षियों का झुण्ड वहाँ देखा जा सकता है। अभी बरसात का मौसम आने वाला है। जब जून में बूँदाबाँदी होती है तो तरह-तरह के कीड़े और पंख वाली दीमक उड़ती हैं। और कई पक्षी इन पर झपटते हैं। वैसे आमतौर पर किसी भी मौसम में सुबह या शाम का वक्त पक्षी अवलोकन के लिए उपयुक्त होता है।

- देवकीनंदन मिश्राराज

- के.आर. शर्मा

संयोग से हुई खोजें

कितनी ही खोजों के साथ कोई न कोई मज़ेदार कहानी जुड़ी है। ये घटनाएँ इन खोजों को और अधिक रोचक बना देती हैं। यहाँ कुछ ऐसी ही खोजें दी जा रही हैं।

भले ही कोई खोज किसी संयोग से हुई। लेकिन अक्सर खोजकर्ता वही होता है जो सालों से उस समस्या में भिड़ा हुआ था। वही उस घटना का महत्व समझ सकता है। ऐसा नहीं होता तो फिर क्यों न्यूटन ही सेब के गिरने को गुरुत्वाकर्षण बल से जोड़ पाए। वरना सेब तो इससे पहले भी कई बार गिरा होगा। न जाने कितनों ने उसे गिरता देखा होगा।

खोज का श्रेय केवल उस घटना को देखने वाले वैज्ञानिक को ही नहीं जाता है। इसमें उन तमाम वैज्ञानिकों का हाथ भी होता है जिन्होंने इससे जुड़ी हुई घटनाओं को इससे पहले देखा। लोगों को इसके बारे में बताया। शायद ऐसी ही घटनाओं ने इन अचानक हुई खोजों की नींव रखी थी।

वो मशहूर टाँगें



बात 1780 की है। लूसिया गैलवनी अपने घर पर कुछ दोस्तों के साथ बैठी गप्पें हाँक रही थी। वे लोग लूसिया के पति का इंतज़ार कर रहे थे। उनके पति लुगी, इटली में चिकित्सा के प्रोफेसर थे। वे घर में प्रयोग वगैरह करते रहते थे। इसलिए उनके घर में वैज्ञानिक उपकरणों की भरमार थी। इंतज़ार करते-करते कुछ दोस्त पास रखी एक मशीन के साथ खेलने लगे। उस मशीन से स्थिर विद्युत की चिंगारी निकलती थी।

लूसिया के पास एक मेज़ थी। उस पर धातु की एक प्लेट में मेढक की टाँगें रखी थीं। उनका सूप बनाया जाना था। वहाँ एक चाकू भी रखा था। उसका कुछ हिस्सा प्लेट में और कुछ मेंढक की टाँग पर था।

खेलते समय अचानक मशीन से चिंगारी निकली। लूसिया ने देखा कि चिंगारी छूटते ही चाकू को छू रही टाँगों में एक हरकत हुई। जैसे वो ज़िन्दा हों। लूसिया वैज्ञानिकों के बीच पली-बढ़ी थी। उसे लग गया कि यह कोई कमाल की बात है।

पति के आने पर लूसिया ने पूरी घटना सुनाई। लुगी ने इस घटना को दोहराया। फिर मेंढक की टाँगों और स्थिर विद्युत के कई प्रयोग किए। इनसे प्राप्त हुए नतीजों से एक अन्य इतालवी वैज्ञानिक एलिसेंड्रो वोल्टा ने विद्युत बैट्री का आविष्कार किया। ●

स्थिर विद्युत को तुमने भी कभी न कभी महसूस किया होगा। जैसेः

- ❒ दरवाज़े के हैण्डल को छूते ही लगने वाला झटका।
- ❒ टोपी उतारने पर खड़े हुए बाल।
- ❒ कंघी करते वक्त कंघी से चिपकते व चटचट करते बाल।
- ❒ गुब्बारे को रगड़ने के बाद उसका दीवार पर चिपकना।
- ❒ नायलॉन की मच्छरदानी से कभी-कभी तड़-तड़ की आवाज़ के साथ चिंगारी-सी निकलना।

इन सबका कारण स्थिर विद्युत ही है।

एक कीमती खराबी



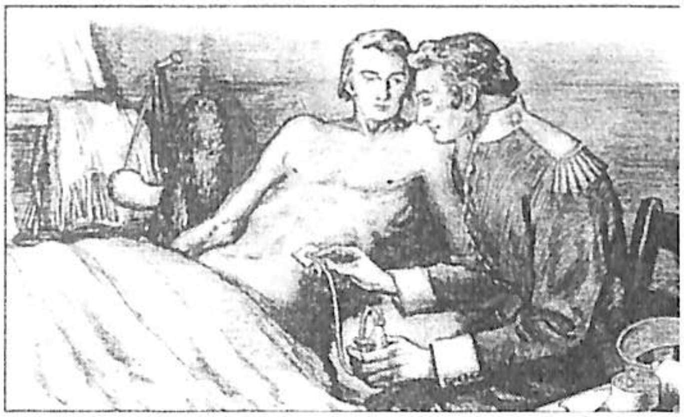
एलैक्ज़ेंडर फ्लेमिंग

1928 की बात है। स्कॉटलैण्ड के एक वैज्ञानिक एलैक्ज़ेंडर फ्लेमिंग बीमारी फैलाने वाले एक बैक्टीरिया का अध्ययन कर रहे थे। वे उसे प्लेट में पनपाने में लगे थे। इसी दौरान वे छुट्टी पर चले गए। बैक्टीरिया का एक नमूना बाहर छूट गया। जब वे लौटे तो उन्होंने उस नमूने पर हरे रंग की फफूँद देखी। उन्होंने उस पर गौर किया।

उन्होंने देखा कि फफूँद के आसपास के बैक्टीरिया मर गए थे। यानी फफूँद बड़ी करामाती थी। उन्होंने दूसरे प्रयोगों में भी इसे करके देखा। ऐसी फफूँद और उगाई। इसे नाम दिया गया पेनिसिलिन। फ्लेमिंग का मानना था कि यह फफूँद कई तरह के बीमारी पैदा करने वाले बैक्टीरिया को मार डालती है।

पेनिसिलिन का आविष्कार चिकित्सा के क्षेत्र की एक बहुत महत्वपूर्ण खोज मानी जाती है। इसने रोगों के इलाज की दिशा ही बदल दी। आज बहुत-सी बीमारियों का इलाज पेनिसिलिन से किया जाता है। चाहे वह कान का संक्रमण हो या कीटाणुओं से होने वाली कोई अन्य बीमारी। ●

ढक्कनदार पेट

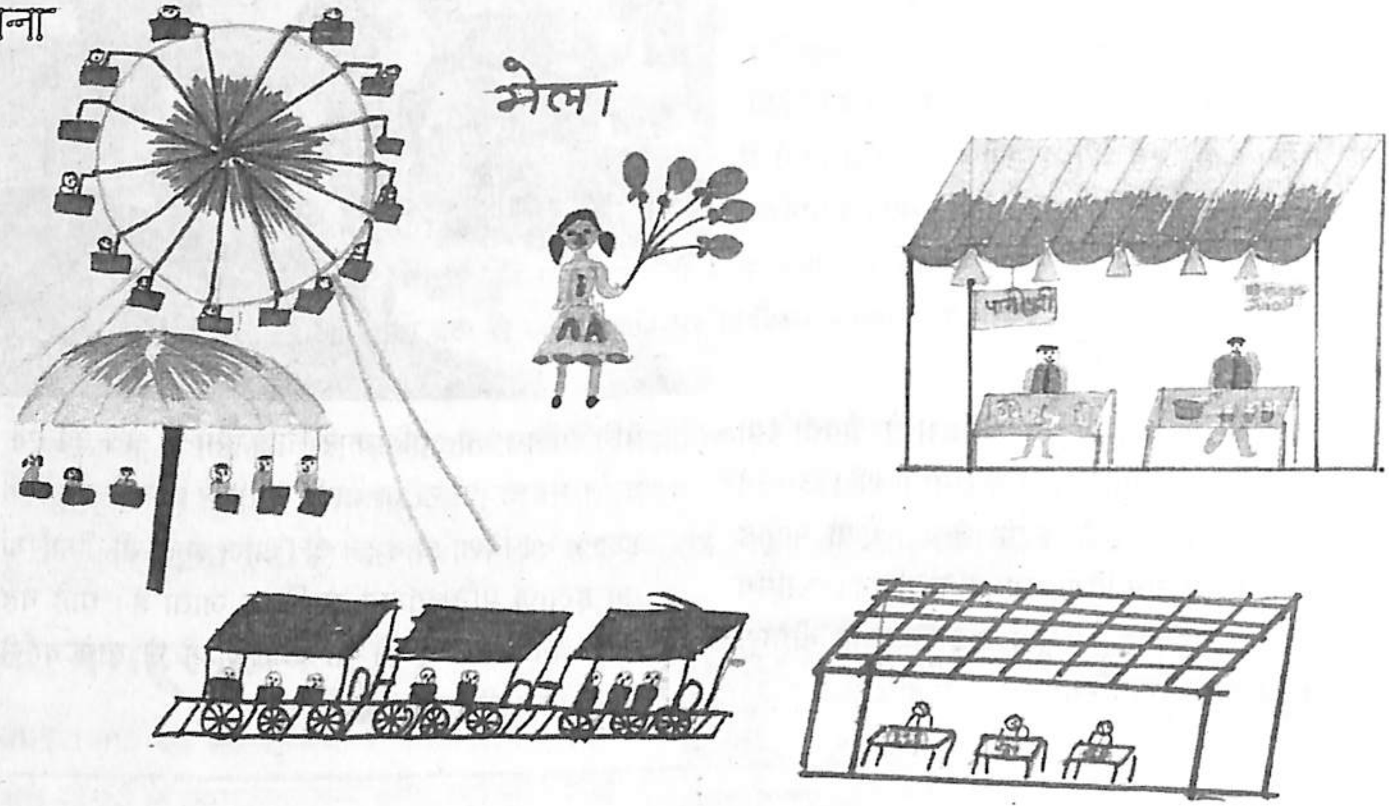


बात सन् 1822 की है। मार्टिन नाम के एक फौजी के पेट में गोली लगी। घाव बहुत गहरा था। घोर ज़ख्मी हालत में उसे डॉक्टर के पास ले जाया गया। डॉ. विलियम बोमोन ने अच्छी तरह से पेट की मरहम पट्टी की। धीरे-धीरे उसका ज़ख्म ठीक होने लगा। पर पेट का छेद नहीं भरा। वह पट्टियाँ बँधवाता रहा। लगभग डेढ़ साल बाद उसने एक अजीब-सी बात देखी।

पेट की चमड़ी ने छेद को ढँक तो लिया था लेकिन फुटबॉल के वॉशर की तरह। निचली तह दबाने पर छेद में से पेट में झाँका जा सकता था। कभी-कभी मार्टिन जो खाता वह छेद से बाहर निकल आता। छेद में ट्यूब डालकर पेट का खाना बाहर निकाला जा सकता था।

अब क्या था। डॉ. साहब को तो जैसे खज़ाना मिल गया। मार्टिन के पेट में झाँककर वे कई बातें पता कर पाए। वे एक धागे में खाने के टुकड़े बाँधकर पेट में डाल देते और फिर देखते कि उसमें क्या बदलाव आया। नौ सालों तक छेद से प्रयोग होते रहे।

इस तरह डॉ. बोमोन पाचन के बारे में बहुत कुछ जान पाए। वे पेट से पाचन रस निकालकर गिलास में रख लेते। फिर मार्टिन को जो कुछ खाने को देते वही उस गिलास में भी डाल देते। गिलास का तापमान पेट के तापमान के बराबर रखा जाता। उन्होंने पाया कि गिलास में भी खाद्य पदार्थ पच जाता है। पर पेट के मुकाबले गिलास में पचने में ज़्यादा समय लगता है। इस तरह पाचन के कई रहस्यों की गुत्थी इस खिड़की वाले पेट ने सुलझा दी। ●

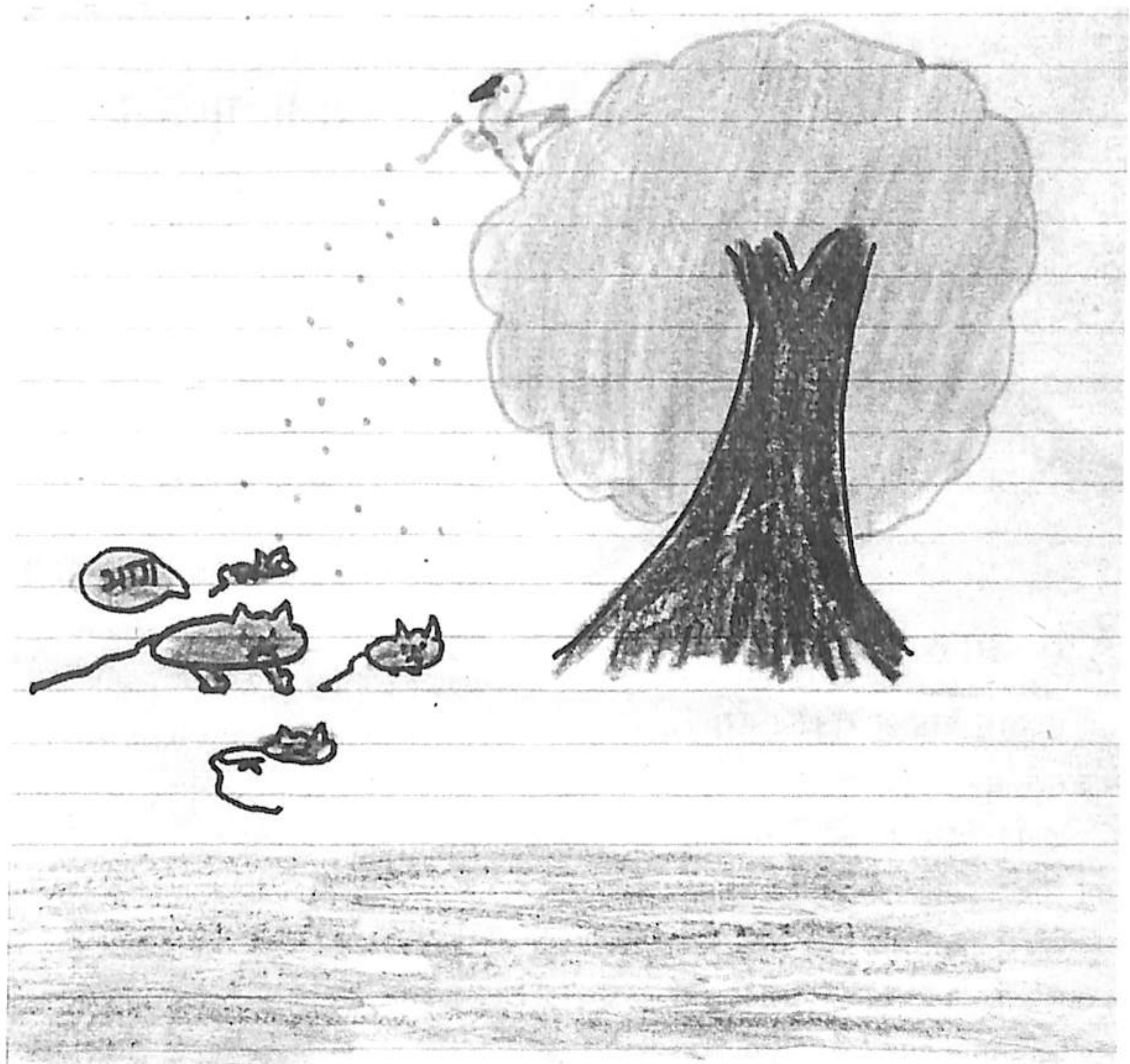


रुचि कश्यप, आठवीं, भोपाल, म.प्र.

पिटाई से बचे

एक बार की बात है। नवरात्रि का समय चल रहा था। देवास के दार्शनिक स्थल टेकरी पर रात 8.00 बजे मैं अपने दोस्तों के साथ जा रहा था। वहाँ पर मुझे खूब मज़ा आ रहा था। दोस्तों के साथ मस्ती करते-करते जब मैं टेकरी के ऊपर पहुँचा तो कुछ व्यक्तियों ने हमें ज़्यादा ऊपर जाने से मना किया। और कहा कि ऊपर जाओगे तो पुलिस तुम्हारी पिटाई करेगी। तब हमने उन्हें अपशब्द कहकर अपमानित कर दिया। और ऊपर चले गए। ऊपर जाकर हम मस्ती करने लगे। तब जो व्यक्ति हमें मना कर रहे थे वे ऊपर आ गए और उन्होंने अपनी पहचान बताई तो वे पुलिस वाले निकले। जो कि बिना यूनिफार्म में थे। जब हमें पता लगा कि वह पुलिस है तो हमारी जान मुँह में आ गई। हमारी घबराहट से पुलिस वालों को लगा कि बच्चों को अपनी गलती का एहसास हो गया है। तब उन्होंने हमें समझाया। थोड़ी देर के लिए तो हमें लगा था कि हमारी पिटाई होगी परन्तु वे पुलिस वाले कुछ नरम दिल थे। उन्हें हम बच्चों पर दया आ गई और उन्होंने कुछ देर बाद हमें वहाँ से छोड़ दिया।

- शब्बीर खान, नवमीं, देवास, म.प्र.



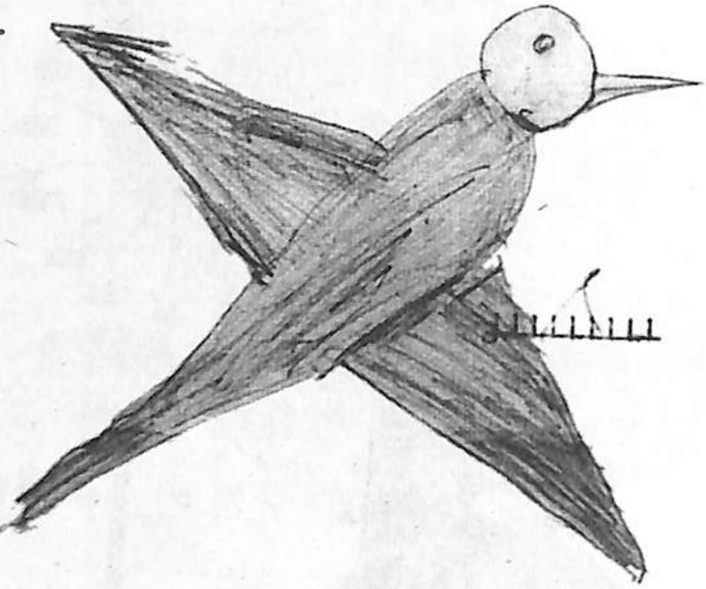
फिरदोस हुसैन, तीसरी (पता नहीं लिखा)

दो ठग

एक बार की बात है मैं अपने गाँव पर था। मैं अपने गाँव के परिवहन रोड पर बैठा था जब दो व्यक्ति मोटर साइकिल से आए और मुझे अपनी-अपनी पहचान बताई मुझसे बात करना शुरू की। उन्होंने मेरे घर का पता पूछकर मुझे उन्हें अपने घर ले जाने का आग्रह किया। तब घर पर कोई नहीं था। घर के बाहर खड़े होकर उन्होंने मुझे पानी लाने के लिए घर के अन्दर भेजा। मेरे घर के बाहर मेरा एक बकरा बँधा हुआ था। मैं घर में से पानी लाया तब बाहर न वे लोग थे और न वह बकरा था।

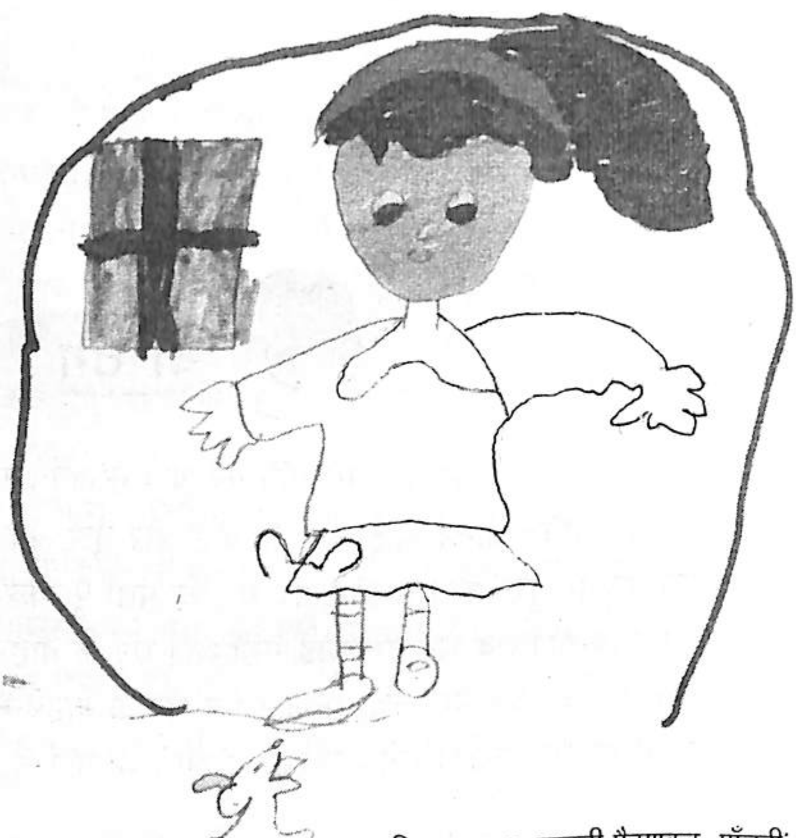
- शब्बीर खान, नवमीं, देवास, म.प्र.





रानी गुड़िया

रानी गुड़िया बहुत प्यारी और होशियार थी। एक दिन वह खेल रही थी, तभी उसके पास एक चूहा आकर बोला - तुम मेरे साथ खेलोगी। यह सुनकर रानी बहुत खुश हुई। वह उसके साथ खेली। दूसरे दिन वापस चूहा आया। उसे देखकर आज तो उसे और भी मज़ा आया। चूहे ने कहा मुझे भूख लगी है। रानी तुरंत अंदर जाकर उसके लिए खाना लाती है। फिर वह खाना खाता है। ऐसे रानी और चूहे की दोस्ती हो जाती है। फिर वह उसके साथ रहने लगता है।

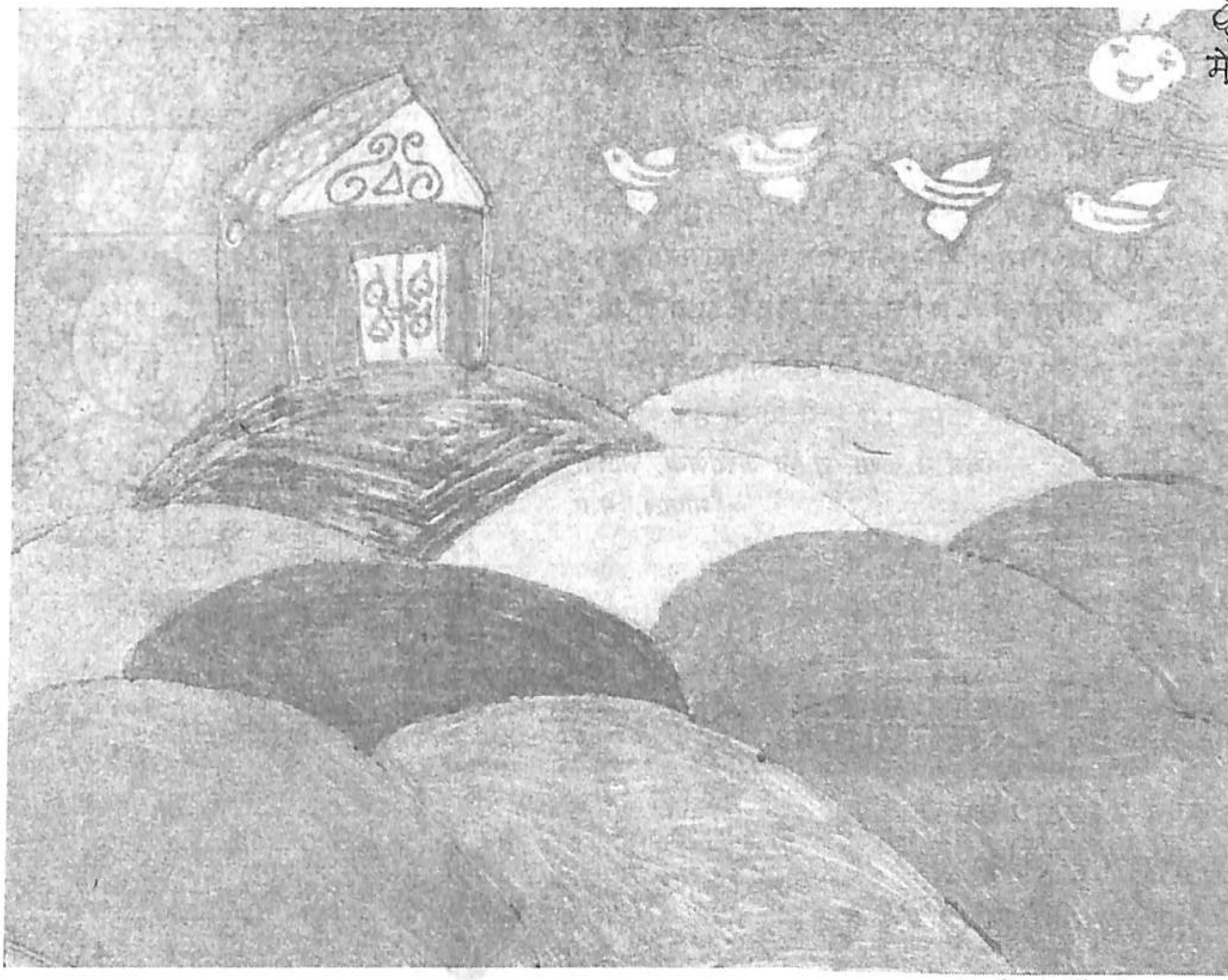


चित्र व कथा- *इशानी पैठणकर, पाँचवीं, भोपाल, म.प्र.*

चिड़िया और एक काँच

हमारे यहाँ एक चिड़िया आती थी। उसने एक दिन हमारे घर में एक घोंसला बनाया। फिर एक दिन मेरी मम्मी ने उस घोंसले को तोड़ दिया। फिर एक दिन चिड़िया ने घोंसला बनाया। उस घोंसले में उसने अण्डे दिए। एक दिन हमारे यहाँ मोटर साइकिल आई। उसके काँच में वह अपना चेहरा देखकर चौंक गई। वह उससे लड़ाई करने लगी। वह उस पर चोंच मारती थी। एक दिन उसकी चोंच टूट गई। फिर हमने उस काँच पर कपड़ा लगा दिया। उसने दोस्तों को बुलाकर उसके जैसे दिखने वाले को ढूँढा पर वह नहीं मिला। हमने उस कपड़े को हटा दिया। तब उस चिड़िया और उसके साथियों ने उसको बहुत पीटा और वह काँच फूट गया।

चित्र व कथा- *ऋषभ रायपुरे, पाँचवीं, सारणी, म.प्र.*



- रोशनी, छठवीं, भोपाल, म.प्र.

भूत पीछे पड़ा

एक बार नदी में हम नहाने के लिए गए थे। इस बीच में हमने मगर देखी। वह मगर हमारे पीछे लग गई और हम नदी में से भागे। भागते-भागते हम जंगल में पहुँचे। फिर हमें एक चीता मिला। चीता भी हमारे पीछे दौड़ने लगा और हम भागने लगे। भागते-भागते हमें एक जंगली सुअर मिला।

एक तरफ चीता, एक तरफ जंगली सुअर। हम घबरा गए। फिर हमने सोचा कि अब क्या करें। हमें फिर एक उपाय सूझा कि हम इनसे दोस्ती कर लें। फिर हमने चीता और जंगली सुअर से दोस्ती कर ली। फिर एक दिन हमने सोचा कि अब हमें घर लौटना है। हमने चीता और जंगली सुअर से कहा कि हम पानी पीकर आते हैं। जंगली सुअर और चीता ने कहा - ठीक है पर हम भी चलेंगे। हम फिर सोचने लगे कि अब क्या करें। तो चीता और जंगली सुअर ने कहा कि क्या सोच में पड़ गए। हमने कहा कि कुछ नहीं तुम भी चलो।

फिर हम तीनों गए तो हमें एक भूत मिला तो हम डर गए। हमने चीता और जंगली सुअर से कहा कि अब क्या करें तो चीता और जंगली सुअर ने कहा - कोई उपाय सोचते हैं। दोनों को एक उपाय सूझा।

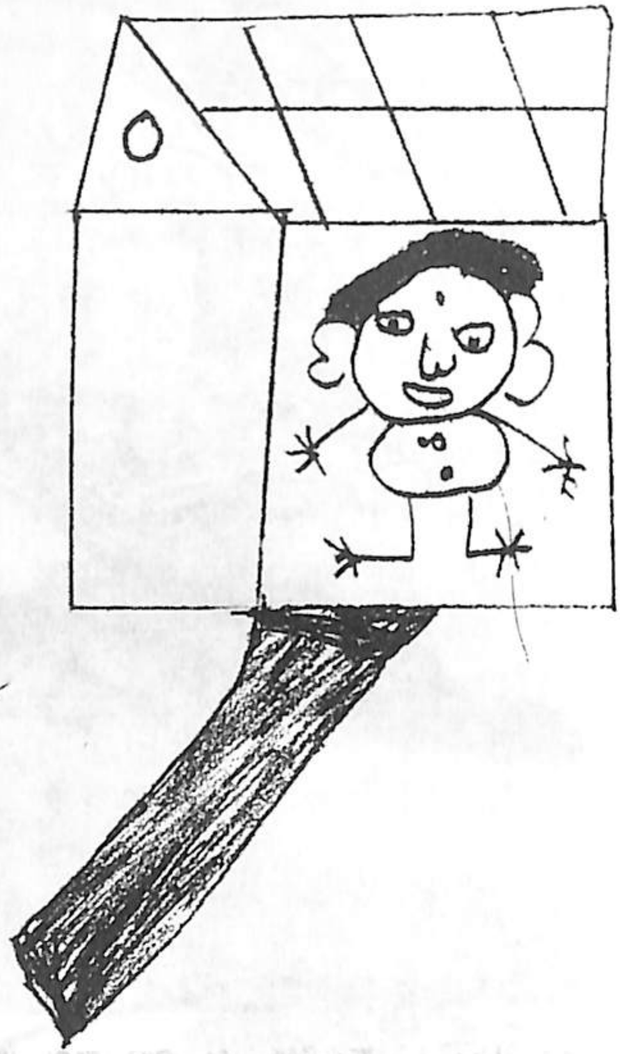
दोनों ने कहा - भूत भाई हमने तुम्हारा क्या बिगाड़ा है। भूत ने कहा - तुमने कुछ भी नहीं बिगाड़ा पर मुझे भूख लगी है। इसलिए मैं तुम सबका खून पिऊँगा तो चीता और जंगली सुअर ने कहा - तुम हमारा खून मत पिओ क्योंकि जानवरों का खून खराब होता है।

प्रस्तुति- दीपक वर्मा, अजनास, देवास, म.प्र.

होमवर्क

मेरे विद्यालय में एक दिन जब गणित का पीरियड आया तब मेरी मैडम ने मुझे खड़ा कर दिया। और पूछा कि तुम्हारा ज्योमैट्री बॉक्स कहाँ है। तब मैंने मैडम से कहा कि मैडम हमारे पास नहीं है इसलिए हमने स्कूल का काम पूरा नहीं किया है।

चित्र व कथा- *सपना करोजियां, सातवीं, भोपाल, म.प्र.*



मेरा बचपन

जब मैं छोटी बच्ची थी,
मैं बहुत ही अच्छी थी,
बिल्कुल सीधी सच्ची थी
जब मैं छोटी बच्ची थी।

मिट्टी खाती रहती थी,
गिट्टी खाती रहती थी,
जब मैं चींटी देखती थी,
तो मैं खुश हो जाती थी।

जब मैं पापा को देखती थी
दौड़ी-दौड़ी जाती थी,
जब मैं मम्मी को देखती थी,
झट गले लग जाती।

मामा जब भी आते थे,
टॉफी वे लाते थे,
जब मैं टॉफी खाती थी,
बहुत खुश हो जाती थी।

- वर्तिका सिंह, चौथी, फैज़ाबाद, उ.प्र.

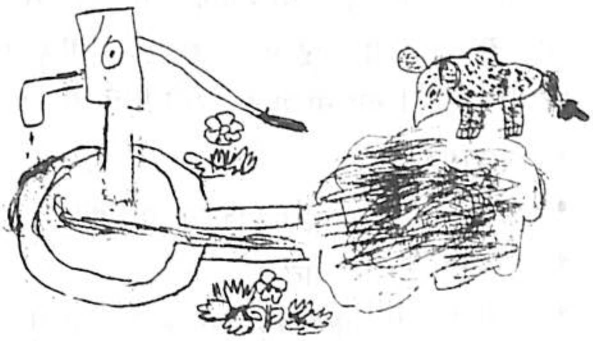
आग

पाँच साल पहले की बात है कि हमारे घर के पड़ोस में एक व्यक्ति कपड़े सिलाने के लिए आया था। दर्जी ने उसका नाप लिया। और नाप लेकर उसके कपड़े बनाए, दर्जी ने उससे 300 रुपए की माँग की। फिर उसने कहा मैं प्रेस करके रख दूँगा। कपड़े प्रेस करते-करते वह चला गया। प्रेस खुली छोड़ कर। प्रेस गरम होकर कपड़ा जला दिया और पास में ही हमें एक बदबू सी आई। हमने खिड़की तोड़ने का प्रयास किया। वहाँ से आग की लपटें निकलकर एक बच्चे का मुँह जला दिया। फिर पुलिस को फोन किया। उन्होंने एम्बोलेंस बुलाई और आग को रोका। तब हमें चैन मिला।

- शकिर हुसैन, नवमीं, देवास, म.प्र.



- *शकीना मंसूर, नवमीं, खातेगाँव, म.प्र.*



घटना

हम हमारे दोस्त के साथ खेत पर जा रहे थे तो मेरी बहिन ने कहा कि तुम घर जाओ। मैं वापस आ गया। सुनील के घर पर साँप आया। सारे लोग साँप को मारने लगे और कहते जिंदा मत छोड़ना नहीं तो रात में आकर काट खाएगा। कहते हैं कि मारने वाले की तस्वीर ले जाता है। मैं डर गया और वहाँ से घर आ गया, फिर मुझे मेरे पिताजी ने खेत पर भेज दिया।

देवपाल, आठवीं, देवास, म.प्र.

वर्षा ऋतु

वैसे तो हैं कई मौसम,
पर मेरा मनपसंद वर्षा का मौसम
रिमझिम-रिमझिम वर्षा आए,
सबके मन को हर्षा जाए।

बादलों ने घेर लिया,
बच्चों ने देख लिया
बच्चे आते हँसते-हँसते,
नाचते गाते धूम मचाते।

जब यह वर्षा रानी आए,
सबके मन में खुशी जगाए
धरती की यह प्यास बुझाए,
धरती हरी-भरी हो जाए।

स्नेहा तिवारी, पाँचवीं, फैज़ाबाद, उ.प्र.



चित्र- विनती विश्वास, हरणगाँव, देवास, म.प्र.



अपनी प्रयोगशाला

क्या तैरा, क्या डूबा

रमा का उस दिन का नहाना एक घंटे से भी ज़्यादा लम्बा चला। हुआ यूँ कि साबुन का एक छोटा-सा टुकड़ा अचानक हाथ से फिसला और छपाक से पानी में गुम हो गया। पर जब खाली मग डाला तो वो तैरता रहा। यह क्या बात हुई भला। चलो देखती हूँ क्या डूबता है, क्या नहीं। नहाना भूल उसने पानी में

- साबुनदानी
- कपड़े धोने वाला प्लास्टिक का ब्रुश
- प्लास्टिक की बोतल
- खाली मग, फिर पानी से आधा भरा मग
- रगड़ने वाला स्पंज
- कॉर्क
- पहले झाड़ू की सींकें और फिर झाड़ू डाला।

कुछ डूबा, कुछ तैरा!
कुछ पानी में सीधा तैरा, कुछ झुका-सा रहा!

बड़ा मज़ेदार खेल था। अचानक एक और खुराफात सूझी।



शुरुआत खाली मग से हुई

खाली मग तैरा...
थोड़ा पानी डाला तो कुछ डूबा...
पानी से पूरा भरा तो गुड़-गुड़ कर डूब गया।

(इस बार रमा एक चीज़ चूक गई। मग कब सीधा था, कब तिरछा। तुम ध्यान रखना)

अब हाथ लगा साबुन। जिससे खेल शुरू हुआ था। इसे कैसे तैराया जाए???

क्या उसका पतला-सा टुकड़ा तैरेगा?

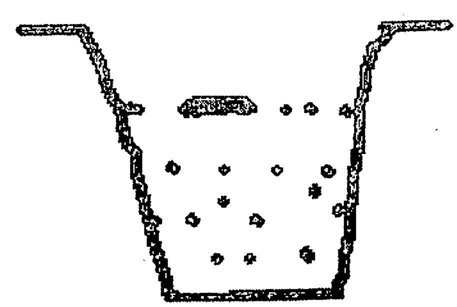
आगे का खेल गुसलखाने से निकले बगैर नहीं हो सकता। रमा बाहर निकली।

उसने औरों को भी इस खेल में शामिल कर लिया। पापा ने बताया कि -

- पिन
- पेपर क्लिप
- सुई
- ब्लेड

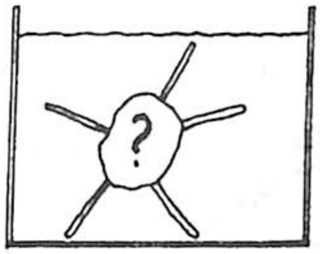
को कुछ सूझबूझ और बार-बार के अभ्यास से तैराया जा सकता है।

बालटी में पानी को स्थिर हो जाने दो। अब पिन को धीरे से पानी पर लिटा दो। अगर एक बार न कर पाओ तो फिर से कोशिश करो।



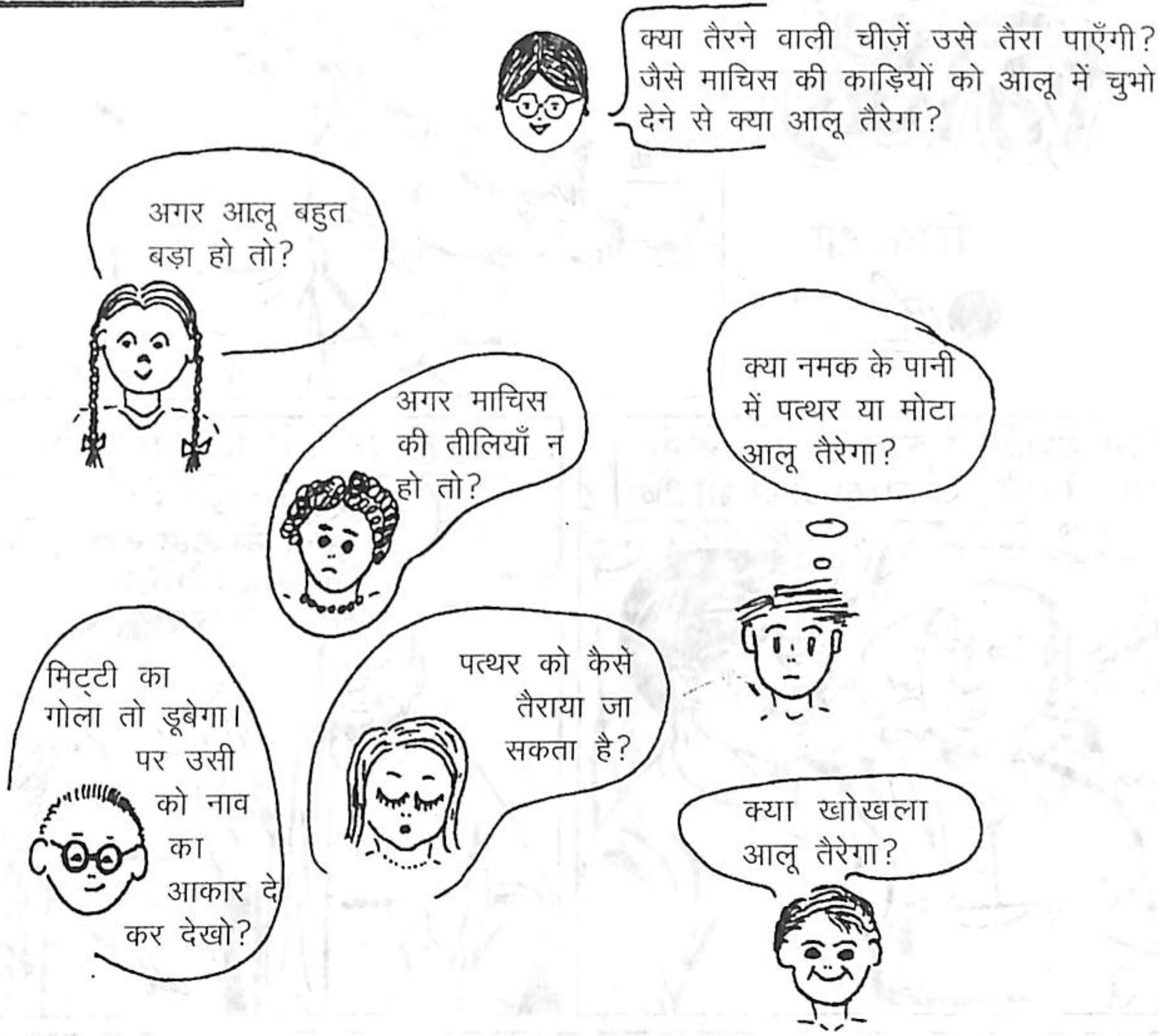
जब वो तैर जाए तो देखना कि क्या वह वैसे ही तैरता है जैसे लकड़ी का टुकड़ा तैरता है या कॉर्क तैरता है?

अगर क्लिप को पानी में लेटाने की बजाए सीधा डाला जाए तो क्या होगा?



डूबते को तिनके का सहारा

वैसे तो आलू पानी में डूब जाता है। उसे कैसे तैराएँ? इस खेल में अब रमा के दोस्त भी शामिल हो गए...



सुझाव तो बहुत आए। पर हुआ क्या? जानने के लिए सामान इकट्ठा करो और शुरू हो जाओ...।

मई 2005 अंक के माथा पच्ची हल

1. a b e i c g b h f
2. किसी एक सिरे को फाड़कर या काटकर थोड़ा छोटा कर लो। अब इसे सीधा रखकर झटके से खींच दो। सिक्के भी नहीं गिरेंगे और कागज़ भी बाहर आ जाएगा।
3. वही संख्या।

मान लो तीन अंकों की संख्या 453 है

$$453 \times 10 = 4530 - 453 = 4077$$

$$4077 \div 9 = 453$$

मई 2005 अंक के चित्र पहेली हल

1 प		2 क	च	3 रा		4 वा	5 ल	
6 हा	व	ड़ा		7 ज	ड़		की	
ड़		ही		धा		8 ग	र	9 म
	10 पा		11 प	12 नी	र			च्छ
13 प	न	घ	ट		14 ज	य	15 पु	र
तं			16 ना	17 दा	नी		ल	
18 ग	19 ग	री		दा		20 ची		21 ख
	ठ		22 चाँ	दा		23 त	रा	जू
	24 री	छ		25 दी	वा	ल		र

नकली भिक्षु

चित्रकथा



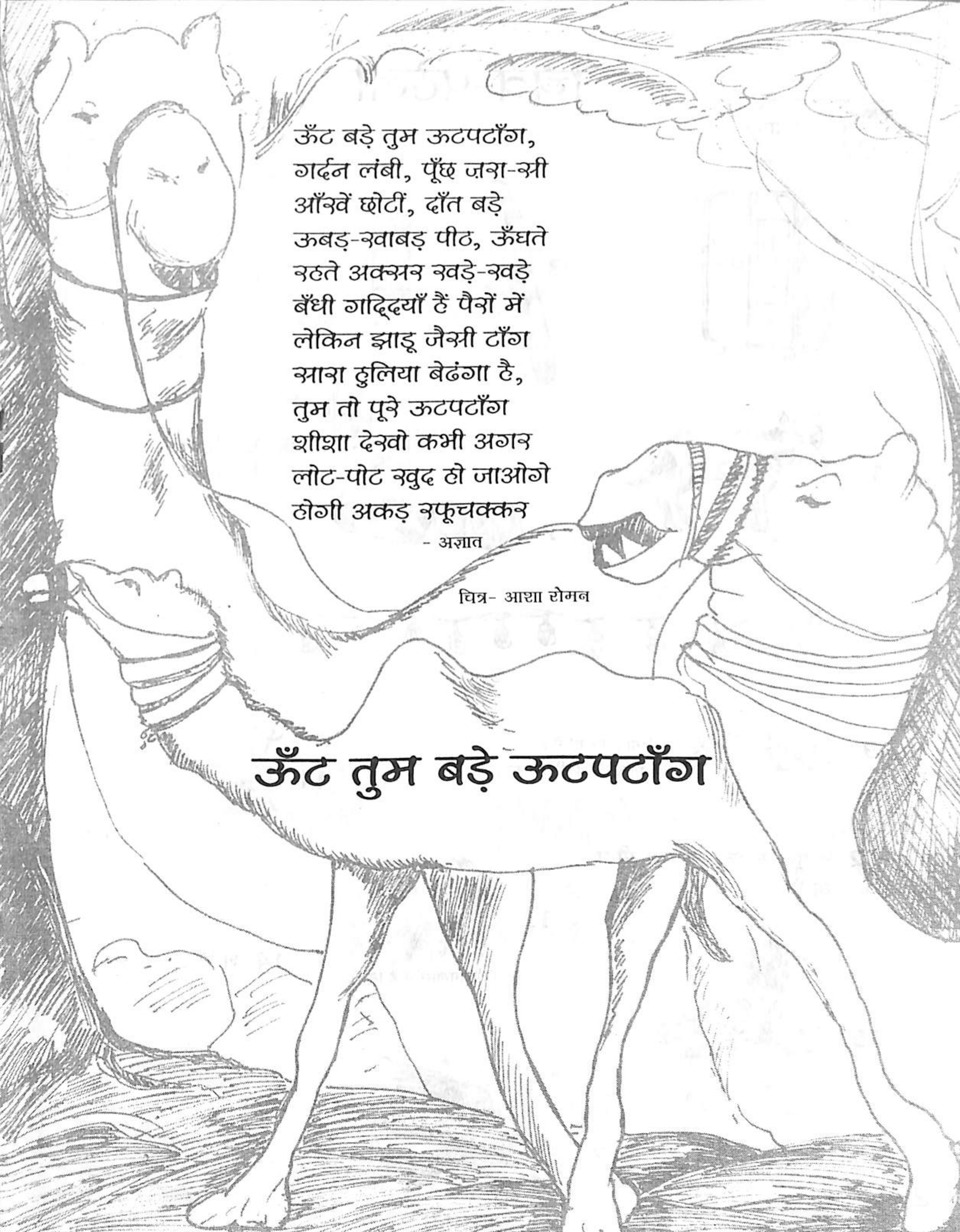



बड़े टोंग ने अपना सिर मुंडा लिया, गेरुआ चोगा पहन लिया और नकली भिक्षु बन कर एक सूने मंदिर में रहने लगा।
इस बीच छोटे टोंग ने गाँवों में जा कर गाय-भैंसें चुराईं और उन्हें जंगल में छुपा दिया।
फिर उसने भिक्षु बने बड़े टोंग को बता दिया कि उसने क्या किया है, और मवेशियों को जंगल में कहाँ छुपाया है।
उसके बाद उसने गाँव वालों को बताया-
भाइयो! एक भिक्षु है, जो भूत, भविष्य और वर्तमान सब कुछ बता सकता है!
बेचारे गाँव वाले अपने खोए मवेशियों का पता लगाने के लिए उस नकली भिक्षु के पास गये।
अभी बताता हूँ!
भिक्षु बने टोंग ने स्लेट पर कुछ लाइनें खींचीं और उन्हें बताया कि उनके खोए मवेशी कहां मिलेंगे।
वे बहुत खुश हुए और भिक्षु को ढेर सारे उपहार दिए।
एक दिन उस नगर के प्रमुख की हीरे की अंगूठी खो गई। उसने अपने नौकर को भिक्षु के पास उसका अता-पता पूछने को भेजा।
जाओ! भिक्षु ही पता लगायेंगे!


अब तो बड़े टोंग की सिट्टी-पिट्टी गुम! सोचा, बेकार इस झंझट में पड़ा। नगर-प्रमुख का मामला है। कहीं लेने के देने न पड़ जायें!
अचानक उसके मुँह से निकल पड़ा-
अब तुम्हारी खैर नहीं है टोंग! अब तुम्हें कोई नहीं बचा सकता!
संयोगवश, उस नगर प्रमुख के नौकर का नाम भी टोंग ही था, जो भिक्षु के पास नगर प्रमुख के हीरे की अंगूठी का अता-पता पूछने आया था।
भिक्षु की बात सुन कर सेवक टोंग का डर के मारे चेहरा पीला पड़ गया। उसने भिक्षु के पैर पकड़ लिये और रोने लगा।
अंगूठी मैंने ही चुराई है!
उसने बता दिया कि अंगूठी कहाँ रखी है!
मेरी जान बचा लीजिये!
नकली भिक्षु मन-ही-मन बड़ा खुश हुआ कि तकदीर ने उसका फिर साथ दे दिया।
उसने नगर प्रमुख को जा कर बताया कि अंगूठी कहाँ पाई जा सकती है।
मगर मैं चोर का नाम नहीं बता सकता! भिक्षुओं को दयालु होना चाहिये!


अंगूठी मिलने के बाद-
आप भर पेट भोजन करें!
नगर प्रमुख ने उन्हें बहुत सारे कीमती उपहार दिये।
खुशी में अधिक खाने के चक्कर में भिक्षु के गले में मुर्गे की एक हड्डी अटक गई-
उफ़! गले से हड्डी निकालने में शर्म आ रही है.. सामने नगर प्रमुख खंभे के सहारे खड़े हैं!
आखिर में भिक्षु अपना सिर ऊपर-नीचे हिलाने लगा.
लगता है, इशारे से भिक्षु मुझे बुला रहे हैं!
नगर प्रमुख के भिक्षु की तरफ बढ़ते ही खंभे पर बिजली गिरी।
बिजली की कड़क से भिक्षु इतना डर गया कि उसने हड्डी निगल ली और बेहोश हो गया।
कड़क
होश आने पर-
मुझे पहले ही मालूम पड़ गया था कि खंभे पर बिजली गिरने वाली है! इसलिये आपको बुला रहा था।
खुशी में नगर प्रमुख ने भिक्षु को राजकीय मंदिर में रहने को कहा।
एक दिन महल के तालाब में एक नाग घुस गया।
आप ही कुछ करें!
किसी की हिम्मत नहीं होती थी कि तालाब से पानी ले!


भिक्षु तो स्वयं डरपोक था-
पानी में झाँक कर देखता हूँ... नाग कितना बड़ा है!
मगर पानी में वह दुर्भाग्यवश फिसल कर गिर पड़ा!
डर और घबराहट में उसने सहारे के लिए कुछ पकड़ा-
अरे! भिक्षु ने तो नाग को हाथ से ही पकड़ लिया!
उसकी बहादुरी के चर्चे दूर-दूर तक फैल गये! एक बार-
भिक्षु! दुश्मनों ने हमला कर दिया है! आप सेना के आगे-आगे चलेंगे!
ज़जी!
भिक्षु को घुड़सवारी आती थी नहीं।
एक उपाय है! तुम्हारे पाँव घोड़े के पेट के नीचे बाँध देता हूँ, ताकि गिरो नहीं।
लेकिन छोटे टोंग के बांधने पर भी वह सरक कर नीचे लटक गया।
घोड़े की ऐसी उल्टी सवारी करते देख डर कर दुश्मन सेना भाग खड़ी हुई-
भागो! यह कोई जादूगर है!
इस तरह नगर प्रमुख की सेना की जीत हुई!
जीत के बाद भिक्षु को घोड़े पर सीधा बिठाया गया।
सिर नीचे करके, उल्टा लटक कर मैं दुश्मनों के काले जादू से बचाव कर रहा था और उन पर अपना काला जादू चला रहा था!
इस विजय से टोंग का नाम दूर-दूर तक फैल गया।



ऊँट तुम बड़े ऊटपटाँग

ऊँट बड़े तुम ऊटपटाँग,
गर्दन लंबी, पूँछ ज़रा-सी
आँखें छोटीं, दाँत बड़े
ऊबड़-खाबड़ पीठ, ऊँघते
रहते अक्सर खड़े-खड़े
बँधी गद्दियाँ हैं पैरों में
लेकिन झाड़ू जैसी टाँग
सारा हुलिया बेढंगा है,
तुम तो पूरे ऊटपटाँग
शीशा देखो कभी अगर
लोट-पोट खुद ही जाओगे
होगी अकड़ रफूचक्कर

- अज्ञात

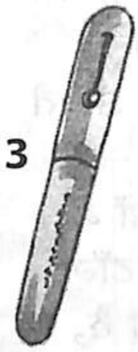
चित्र- आशा रोमन

चित्र-पहेली

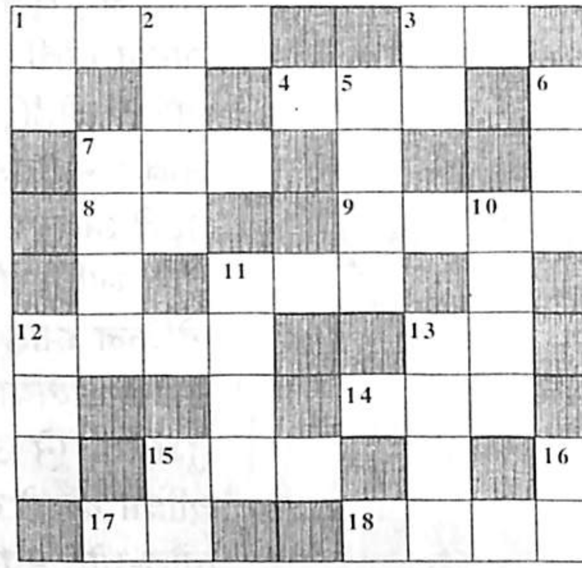
संकेत बाएँ से दाएँ



1



3

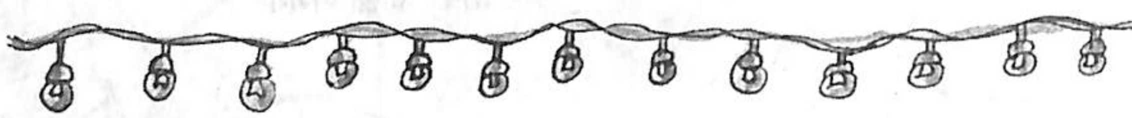




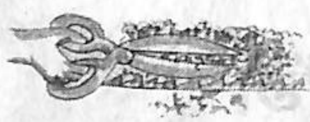
4



7



8



9 ('बात करना' में है टुकड़े-टुकड़े चीज़ें करना)



11 ('अलकायदा' में है बुरा वक्त)

12 न पूरा खट्टा, न पूरा मीठा यानी......



13 ('खासमखास' में है मित्र)

14 शांति .....(उर्दू)



15



17

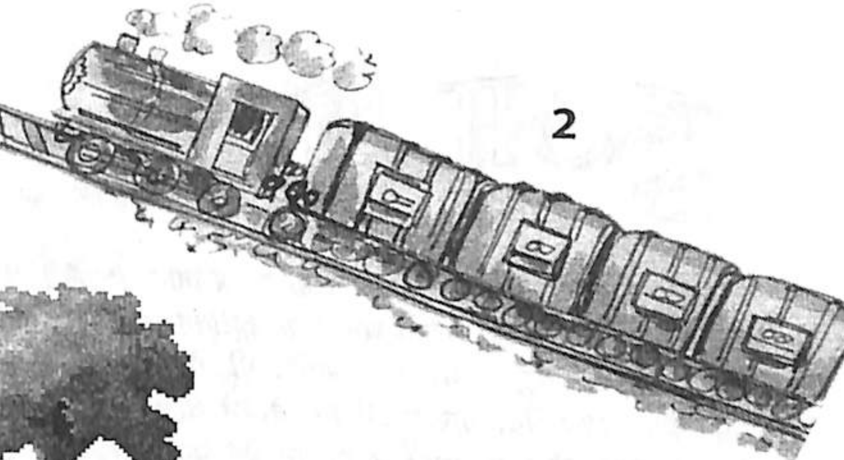


18

संकेत ऊपर से नीचे

1



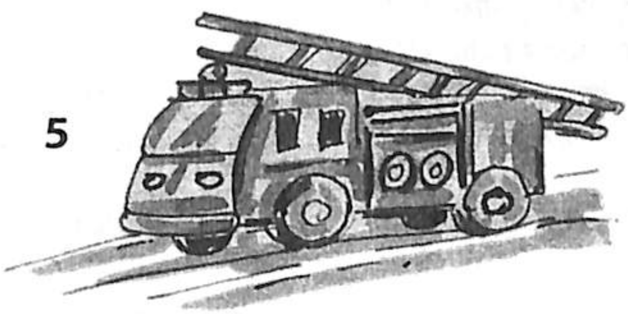


2



3

5



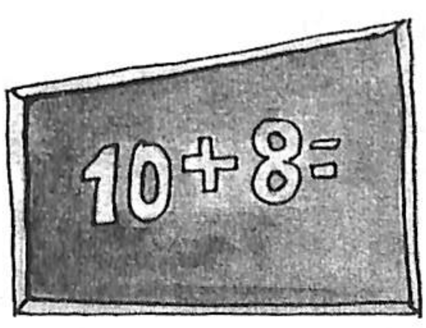
6 खुशबूदार हरी पत्तियाँ

7

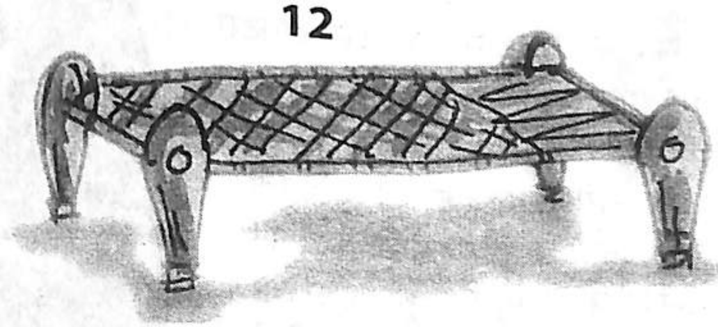


10 'वानर सखा' में है एक कवि

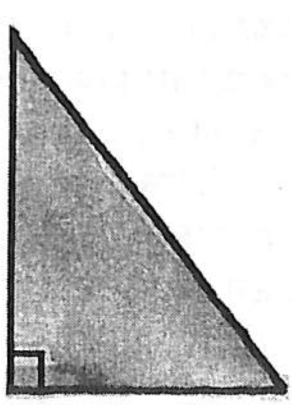
11



12



13



15



16 'तिगना' में रफ्तार

हुआ यूँ कि...



जैसे इमली का नाम लेते ही मुँह में पानी आ जाता है। वैसे ही चार्ली चैपलिन का नाम लेने से हँसी आती है। उनके चलने का तरीका, पैरों से काफी बड़े जूते, एक छुटकी-सी घनी मूँछ, हैट, छड़ी, कुछ अजीब-सी पोशाक और बोलती आँखें। सब मिलकर एक ऐसा दृश्य पैदा करती थीं कि देखने वाला हँसते-हँसते थक जाए। चार्ली का बचपन दुखों से भरा रहा। न पहनने को कभी ठीकठाक कपड़े मिले न पढ़ने को अच्छा स्कूल। किसी दिन खाने का इंतजाम हो जाता तो किसी दिन यूँ ही रहना पड़ता। इस सबके बावजूद चार्ली ने सालों दुनिया को अपनी फिल्मों के माध्यम से हँसाया। खूब हँसाया। एक बच्चे की कहानी 'द किड' उनकी एक महान फिल्म थी। उन्होंने सैंकड़ों फिल्में बनाईं। इस महान हँसोड़ की जीवनी का हिन्दी अनुवाद 'संवाद' नामक प्रकाशन ने छापा है। इस बार इसी किताब के अंश यहाँ दे रहे हैं...

आखिरकार उसने माँ को राजी कर लिया कि उसका स्कूल छुड़ा दिया जाए और वह नौकरी पर लौट जाए।

सबसे पहले एक दुकान में उसने नौकरी की। वहाँ उसने मसाले, धनिया, मोमबत्ती से लेकर मिठाई, बिस्कुट और साबुन को करीने से रखा। फिर बीमार पड़ गया।



इसके बाद सिडनी (चार्ली का बड़ा भाई) की सिफारिश से उसे डॉक्टरों की एक दुकान में स्वागतकर्ता का काम मिल गया। यह काम उसे प्यारा लगा। मरीज़ों का वह स्वागत करता और उनके चेहरों पर हँसी ला देता। उसके काम में यह भी जुड़ा था कि जब सारे डॉक्टर चले जाएँ तो दफ्तर को अच्छी तरह साफ करे। पेशाब से लबालब भरे यूरिन-पॉट को साफ करने में उसे कोई दिक्कत नहीं थी, पर दस-दस फुट ऊँचे काँच तक उसका हाथ ही न पहुँचता। दफ्तर धीरे-धीरे धूसर लगने लगा और उसे बड़ी शालीनता से यह कह दिया गया कि आप इस काम के लिए अभी बहुत छोटे हैं।

नौकरी जाती देख वह बुक्का फाड़कर रो पड़ा तो एक डॉक्टर को दया आ गई। उसने उसे अपने घर में निजी नौकर रख लिया। एक दिन मैडम ने उसे एक जगह की गंदगी साफ करने को कहा। सफाई करते-करते उसे एक पाइप मिली और थोड़ी मशक्कत के बाद वह उसे ट्रम्पेट (बिगुल सरीखा एक बाजा) की तरह बजाने लगा। मैडम ने देख लिया और छुट्टी हो गई।

इसके बाद उसे स्टेशनरी की एक दुकान पर काम मिला, पर कुछ ही दिनों में मालिक को वह पता चल गया कि यह सरकारी सीमा से कम उम्र का है। फिर उसे काँच पिघलाने का काम मिला। उसने स्कूल में काँच पिघलाने के बारे में कुछ पढ़ रखा था और उसे वह रोमांचक लगा था। पहले ही दिन वह भट्टी की तपिश सहन नहीं कर पाया और बेहोश हो गया। मजदूर जब उसे रेत पर लिटा कर होश में लाए तो उसमें इतनी भी हिम्मत नहीं थी कि वह लौटकर एक दिन की तनख्वाह ले सके।

एक दिन उसने एक बोर्ड पढ़ा – वारफेडल प्रिंटिंग मशीन चलाने के लिए एक लड़का चाहिए। उसने एक बार कहीं मशीन चलती हुई देखी थी और उसे यह आसान लगा था। उसने जाकर शेखी बघारी कि वह मशीन को अच्छी तरह चलाना जानता है। फोरमैन उसे मशीन के सामने ले गया। वह दैत्याकार थी। उसे पाँच फुट ऊँचे एक स्टूल पर खड़ा होना पड़ा। फोरमैन चिल्लाया, चालू करो। उसकी फटी हुई आँखें मशीन को ताकती रहीं।





फोरमैन ताड़ गया। चार्ली रिरिया उठा, एक मौका दे दो। मैं आसानी से कर लूँगा।

खैर, फोरमैन ने उसे कुछ बुनियादी बातें समझा दीं। पहले दिन का काम घबराहट पैदा करने वाला था। पेपर रोल को हबुआते हुए खींचती मशीन, उसे लगता, उसे ही खींचकर चूरन बना देगी। बहरहाल, उसे 12 शिलिंग प्रति सप्ताह पर रख लिया गया।

काम कोई बुरा नहीं था और अलस्सुबह सड़कों पर कोहरा छाया होता, तो सूनेपन में घर से निकलकर काम पर जाना उसे अच्छा लगता था। चौराहे पर चाय की दुकानों में केतलियों से भाप निकल रही होती। कहीं से कोई परछाईं आती और चाय की भीनी गंध और झीने धुएँ में घुल जाती।

वह बारह साल का था और मशीनों की खटर-पटर और अत्यधिक श्रम से उसे सिर्फ तीन हफ्तों में ही इनफ्लुइंज़ा हो गया। माँ ने उसका काम छुड़ा दिया और फिर स्कूल भेज दिया।



○○○○○○○○

बहुत दिनों बाद चार्ली के पास अचानक खत आया कि तुरंत संपर्क करो।

वहाँ जाने के बाद थिएटर के मालिक मि. हैमिल्टन ने पहला सवाल उसकी उम्र को ही लेकर किया। चार्ली ने अपनी ज़िंदगी के बीसियों झूठों में से एक झूठ और बोल दिया- चौदह साल। हालांकि था वह साढ़े बारह का ही। उसे बताया गया कि उसे *शरलॉक होम्स* के पेजब्वॉय *बिली* का रोल करना है और उसका दौरा चौदह हफ्तों का होगा। बीच में उसे *शरलॉक होम्स* का किरदार निभानेवाले प्रसिद्ध कलाकार एच.ए. सेंट्सबरी के नाटक *जिम, द रोमांस ऑफ द कॉकनी* में भी काम करना होगा। उसकी तनख्वाह दो पाउंड दस शिलिंग तय की गई। यह तो उसकी लॉटरी खुलने की तरह था, फिर भी थोड़ी अकड़



दिखाने के लिए उसके कहा कि उसके बिजनेस के मामले उसका भाई संभालता है और इस बारे में वह उससे ही मशविरा लेगा। उसकी बात सुनकर सब ठठाकर हँस पड़े। यद्यपि उसका भोलापन मोहक था।

वहाँ से उसे सेंट्सबरी के पास भेजा गया। उसकी दिखती हुई उम्र, कद और मासूमियत ने उसे भी चौंका दिया। उसे सैमी के रोल की स्क्रिप्ट दी गई। स्क्रिप्ट हाथ में लेते हुए वह भीतर से काँप रहा था। उसे लगा, वह उसे अपना रोल वहीं पढ़ने के लिए कहेगा, जबकि उसके लिए काला अक्षर भैंस बराबर था। खैर इजाज़त पाकर स्क्रिप्ट वह अपने साथ घर लेता आया।

रास्ते भर उसके कदमों तले बादल थे। उसे यह विश्वास होने लगा था कि वह अब गंदली झुग्गियों का छोकरा भर नहीं है। वह एक्टर बननेवाला है। वह धीरे-धीरे अपनी माँ के सपनों के सच होने की प्रतीक्षा कर रहे सपनों में घुस रहा था। स्क्रिप्ट एक भूरे रंग के कागज़ में थी। उसने अब तक की ज़िंदगी का सबसे महत्वपूर्ण दस्तावेज़ अपने हाथ में ले रखा था। वह जोरों से रो लेना चाहता था।

जब उसने यह बात सिडनी को बताई तो उसकी आँखें पनीली हो गईं। वह देर तक खिड़की से बाहर देखता रहा और लंबी चुप्पी के बाद बोला, यह हमारी ज़िंदगियों का अहम मोड़ है। काश, इसका मज़ा लेने के लिए माँ हमारे साथ होती।



सिडनी ने मि. हैमिल्टन के पास जाकर चार्ली की तनख्वाह बढ़वाने की कोशिश की। लेकिन वह टस से मस नहीं हुए। दो पाउंड दस शिलिंग भी वैसे दोनों भाइयों के लिए कम नहीं थे। वे राज़ी हो गए। अब दिक्कत थी तो सिर्फ भाषा की। चार्ली को पढ़ना नहीं आता था, लिहाज़ा उसकी जुबान भी बड़ी खुरदुरी थी। नाटक में उसका रोल था भी बहुत बड़ा। सिडनी को काफी मेहनत करनी पड़ी। उसने उसे एक-एक शब्द पढ़कर रटाया और तीन दिनों में ही चार्ली की जुबान पर सैमी सरपट दौड़ रहा था।

ड्यूरी लेन थिएटर में जिम की रिहर्सल शुरू हुई। एक शब्द को छोड़ चार्ली को कोई खास दिक्कत नहीं आई। वह शब्द था- मि. पियरपोंट पोर्गन और चार्ली कहता- मि. पुटरपिंट पोर्गन। रिहर्सल चार्ली के लिए नए आसमान का प्रवेशद्वार थी। उसे पहली बार पता चला कि एक्टिंग भी बड़ी तकनीकी चीज़ है। स्टेज का भी अनुशासन होता है। डायलॉग बोलते समय वह बहुत हिलता था और उसका सिर भी अस्थिर रहता था। सेंट्सबरी ने बड़ी बारीकी से इसे सुधारा। कुछ दृश्यों की रिहर्सल के बाद सेंट्सबरी चकरा गया और पूछ बैठा- तुमने कभी पहले एक्टिंग की है। पूछते हुए उसके चेहरे पर संतुष्टि का भी भाव था। चार्ली क्या जवाब देता? कहता कि एक्टिंग तो मेरा जन्मसिद्ध अधिकार है?

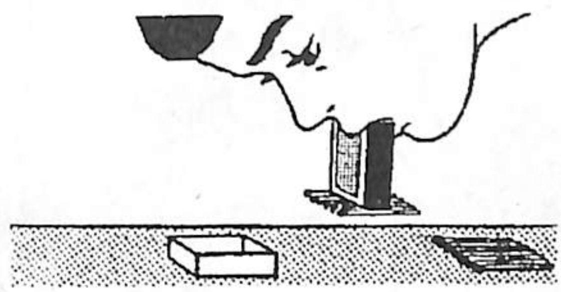
आखिर नाटक का मंचन हुआ। चार्ली के एक-एक डायलॉग पर तालियाँ बजीं। स्टेज पर चार्ली को यह समझ में नहीं आता था कि असली चाय बनाते समय वह प्याले में पहले चायपत्ती डाले या खौलता हुआ पानी। उसे यह समझ में आ गया कि वह जितनी अच्छी तरह डायलॉग बोलता है, मंच के दूसरे कामों में उतना सहज नहीं है।

आलोचकों ने तो नाटक को पीटकर रख दिया। पर चार्ली के लिए इससे बड़ी सफलता और क्या हो सकती थी कि उस भीड़ में भी उसकी शिनाख्त कर ली गई थी। लंदन टॉपिकल टाइम्स में छपी सफलता उसे कंठस्थ हो गई थी। अखबार ने लिखा था- लेकिन इस नाटक का सबसे उजला पक्ष है- अखबार बेचनेवाला लड़का सैमी जिसके हिस्से हँसाने की ज़िम्मेदारी है। भले उसका किरदार बड़े पुराने अंदाज़ का है लेकिन मास्टर चार्ल्स चैप्लिन ने उसे बखूबी निभाया है। इस लड़के का नाम पहले तो कभी नहीं सुना गया। पर इतना यकीन है कि भविष्य में इस लड़के द्वारा महान उपलब्धियाँ हासिल करने की सूचनाएँ मिलेंगी। सिडनी उस अखबार की दर्जन-भर प्रतियाँ खरीद लाया था।

अपनी प्रयोगशाला

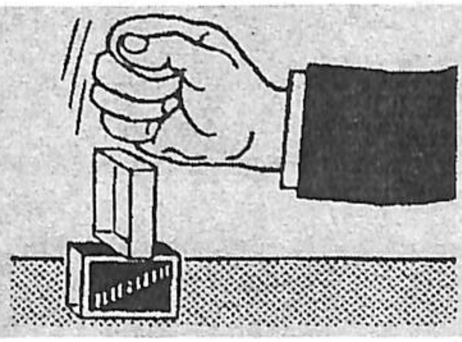
हम्माल हवा

मेज़ पर रखी हुई तीलियों को उठाकर माचिस की डिब्बी में रखना कोई मुश्किल काम नहीं। लेकिन अगर हाथों के इस्तेमाल की मनाही हो तो। चलो एक तरीका हम सुझाते हैं। माचिस के खोके को चित्र में दिखाए तरीके से उठा लो। खोके को मेज़ पर जमी तीलियों के ऊपर रख लो। अब अन्दर की ओर साँस खींचकर माचिस का खोका उठा लो। तीलियाँ भी संग-संग चली आईं ना। ज़रा सोचो क्यों?



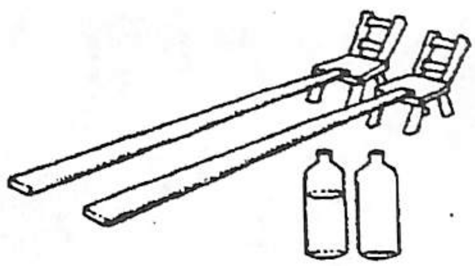
तोड़ सको तो तोड़ दो

माचिस की डिब्बी को पिचकाने में भला क्या ताकत लगती है। चित्र में दिखाए गए तरीके से माचिस के बाहरी खोके और अन्दर वाली दराज को जमा लो। अब इस पर पूरे ज़ोर से एक मुक्का मारो। क्या हुआ? एक बार और कोशिश करो।



बोतलों की दौड़

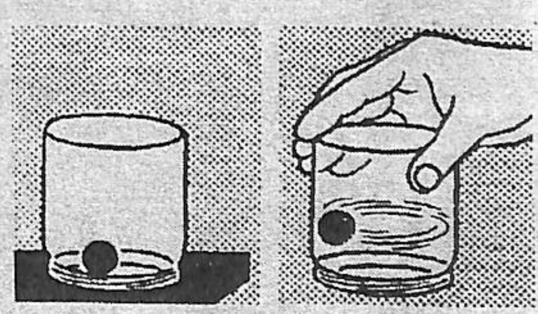
प्लास्टिक की दो बोतलें लो। एक बोतल को आधे तक पानी से भर लो। दूसरी को खाली रहने दो। चित्र में दिखाए तरीके से दो रपटें तैयार कर लो। (दो कुर्सियों पर लकड़ी की दो पट्टियाँ रखकर) अब दोनों बोतलों को इन रपटों से फिसलाओ। ध्यान से देखना। कौन-सी बोतल पहले नीचे पहुँची? शुरू में किस बोतल की रफ्तार तेज़ थी? कौन-सी बोतल दूर जाकर रुकी? क्यों?



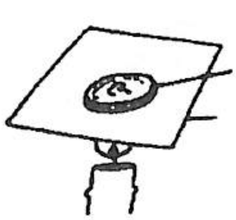
घूमते कंचे

एक कंचे को मेज़ पर रखो। इस पर एक चौड़े मुँह वाली बोतल को औंधा रख लो। बोतल को मेज़ पर रखे-रखे गोल-गोल घुमाओ। इतना कि गेंद बोतल के किनारों को छूती हुई घूमने लगे।

तुम इस औंधी बोतल को उठाकर घूमती गेंद को दूसरी जगह तक ले जा सकते हो। ज़रा करके देखो! हुआ क्या?



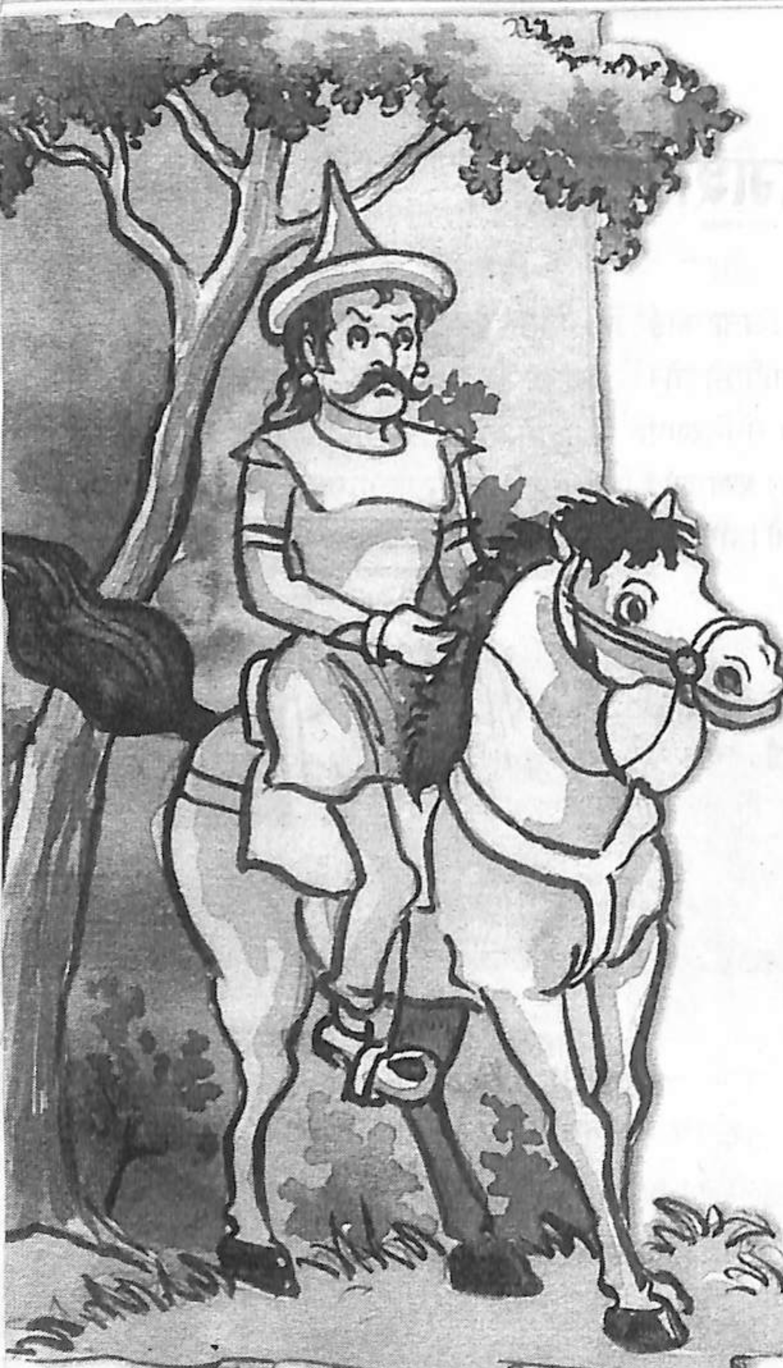
न जलने वाला कागज़



आग से कागज़ या कपड़ा तो तुमने कई बार जलाया होगा। पर यहाँ दिए गए तरीके से कपड़े और कागज़ को रखो। और फिर जलाकर देखो। क्या हुआ? हाँ यह प्रयोग करते समय किसी बड़े को ज़रूर साथ ले लेना।

न जलने वाला कपड़ा





सबसे बड़ा योद्धा

- असग़र वजाहत

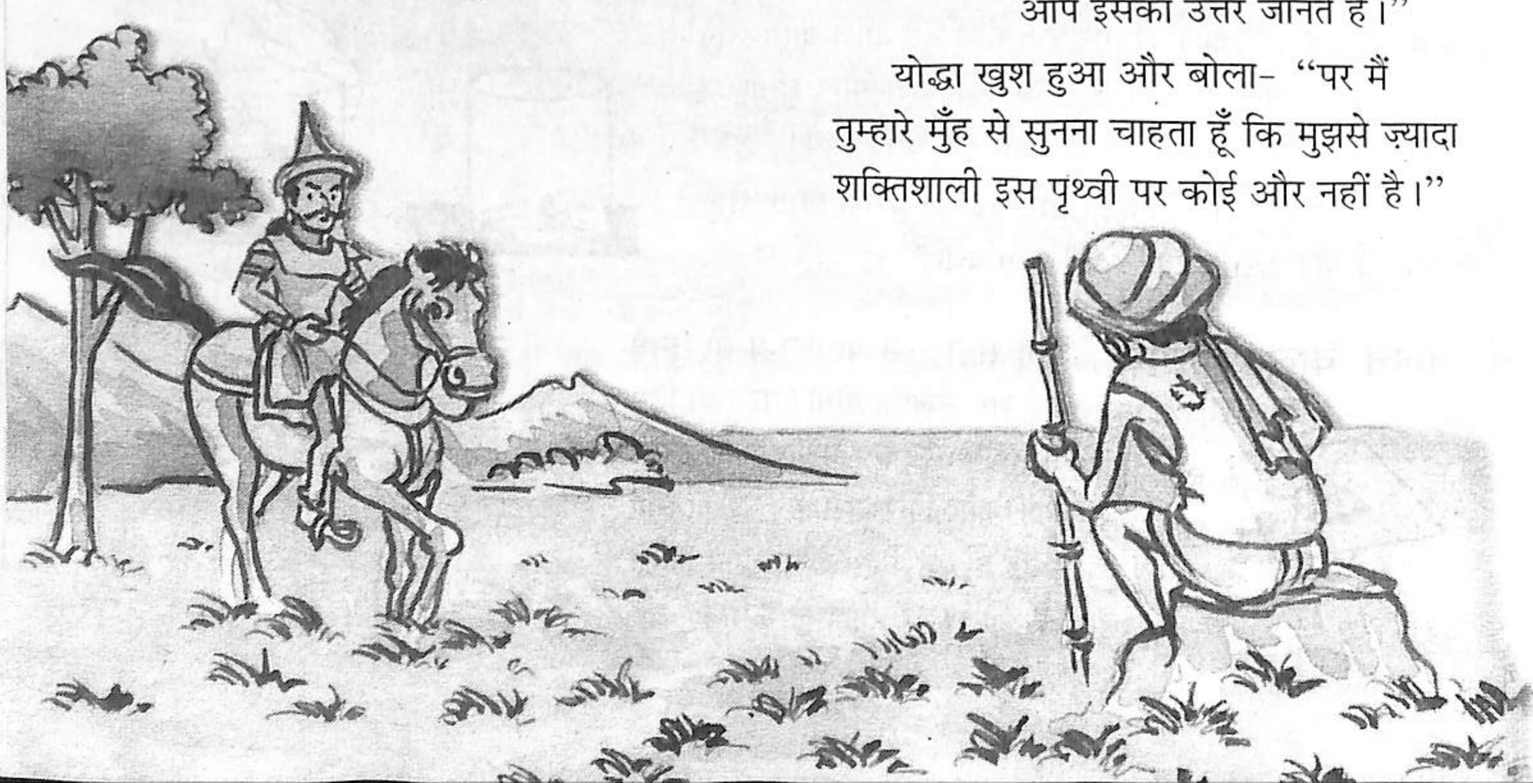
किसी ज़माने में किसी देश में एक वीर योद्धा रहता था। योद्धा को अपनी शक्ति पर बड़ा गर्व था। वह यह समझता था कि पूरे संसार में उससे ज़्यादा शक्तिशाली कोई और नहीं है।

एक दिन योद्धा अपने घोड़े पर बैठा, गर्व से अकड़ता चला जा रहा था कि उसने सामने से एक बूढ़े किसान को आते हुए देखा। बूढ़े, कमज़ोर और गरीब किसान को देखकर योद्धा और ज़्यादा अकड़ गया। योद्धा ने किसान से पूछा- "बताओ, पूरी धरती पर मुझसे शक्तिशाली और दूसरा भी है?"

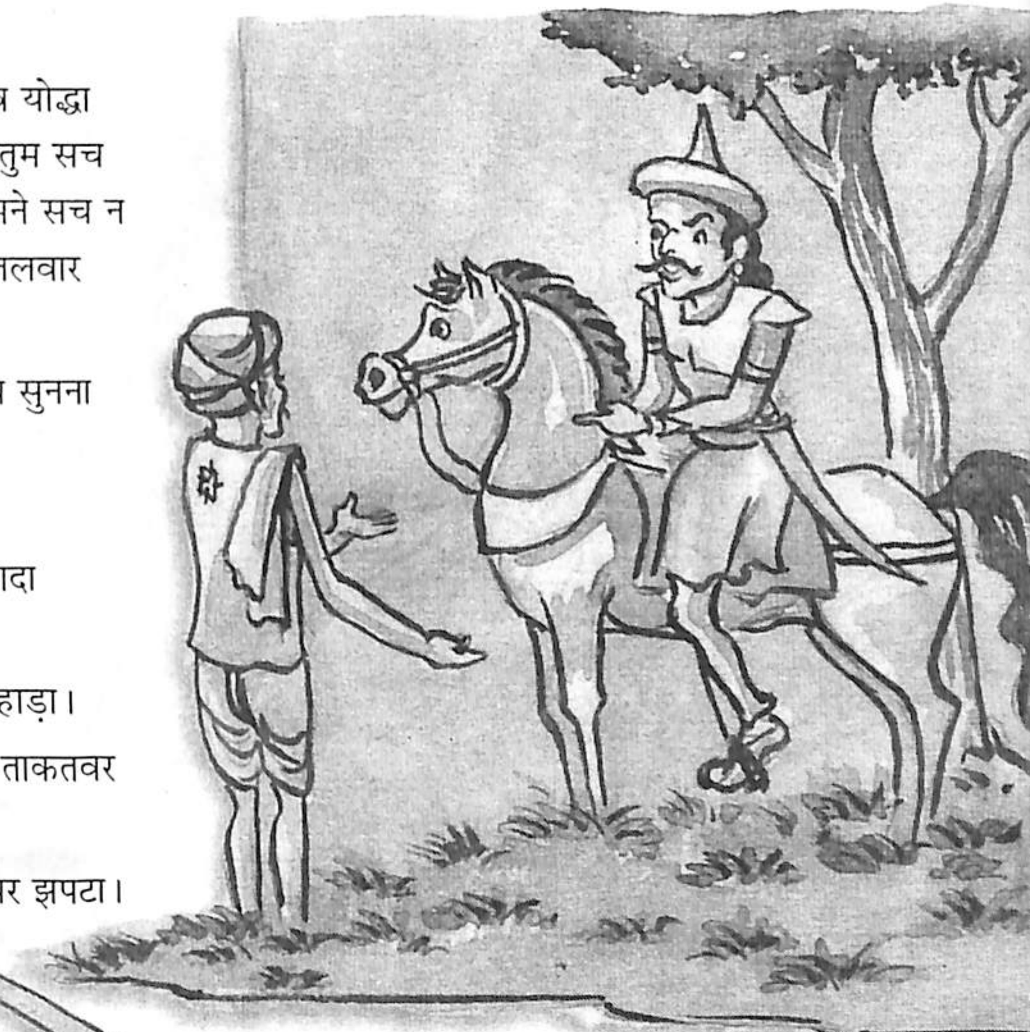
किसान चुप रहा। वह जानता था कि योद्धा यही सुनना चाहता है कि पूरी धरती पर उससे ज़्यादा शक्तिशाली कोई और नहीं है। योद्धा डपट कर बोला- "किसान तुम चुप क्यों हो, बताओ इस संसार में मुझसे ज़्यादा ताकतवर क्या कोई है?"

किसान बोला- "आपके पास इस सवाल का जवाब है आप इसका उत्तर जानते हैं।"

योद्धा खुश हुआ और बोला- "पर मैं तुम्हारे मुँह से सुनना चाहता हूँ कि मुझसे ज़्यादा शक्तिशाली इस पृथ्वी पर कोई और नहीं है।"



किसान फिर भी चुप रहा। अब योद्धा को गुस्सा आ गया। वह बोला- "तुम सच क्यों नहीं बोलते किसान। अगर तुमने सच न बोला तो मैं तुम्हें......।" योद्धा ने तलवार निकाल ली।



किसान बोला- "तो आप सच सुनना चाहते हैं।"

"हाँ बताओ।"

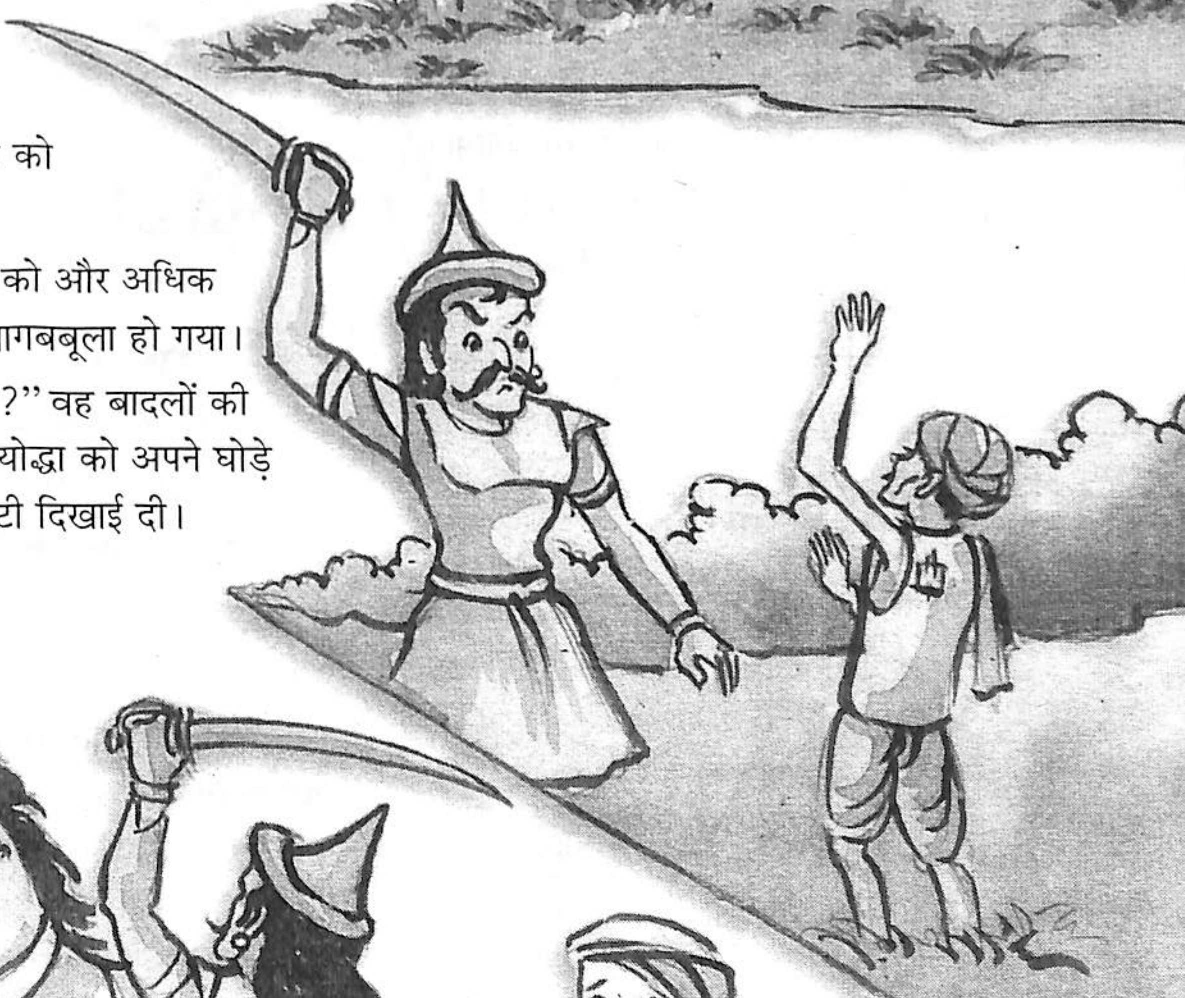
किसान ने कहा- "आपसे ज़्यादा शक्तिशाली तो चींटी है।"

"क्या? योद्धा शेर की तरह दहाड़ा।

"जी हाँ, चींटी आपसे ज़्यादा ताकतवर है।" किसान ने कहा।

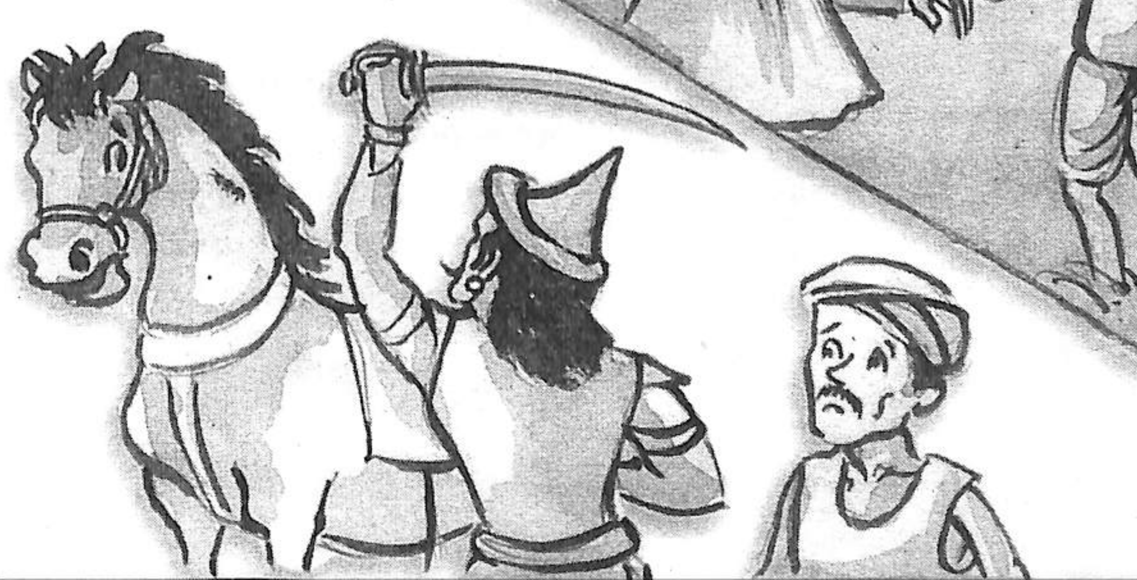
योद्धा तलवार लेकर किसान पर झपटा।

किसान ने कहा- "आप मुझे तो मार सकते हो लेकिन चींटी को नहीं मार सकते।"



यह सुनकर योद्धा को और अधिक गुस्सा आ गया। वह आगबबूला हो गया।

"कहाँ है चींटी...?" वह बादलों की तरह गरजा। अचानक योद्धा को अपने घोड़े की गर्दन पर रेंगती चींटी दिखाई दी।





योद्धा ने तलवार का एक वार किया और घोड़े की गर्दन उड़ गई। चींटी योद्धा को ज़मीन पर चलती दिखाई दी।

योद्धा ने उस पर तलवार से वार किया। ज़मीन में गहरा गड्ढा हो गया। योद्धा ने चींटी को इधर-उधर से ध्यान से देखा। उसे चींटी अपने बाएँ हाथ पर रेंगती दिखाई पड़ी। योद्धा ने चींटी पर एक और वार किया और योद्धा का बायाँ हाथ कट गया।

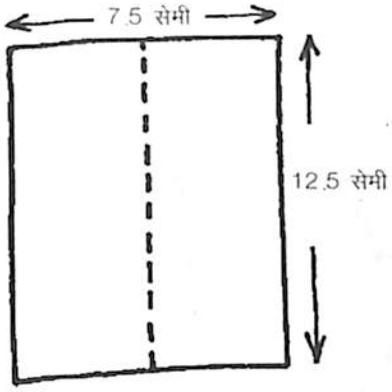




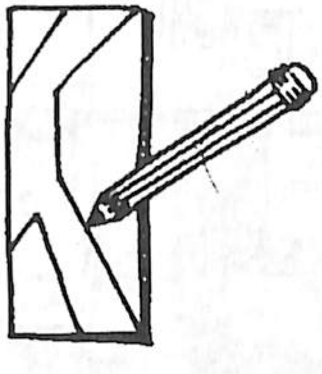
योद्धा को चींटी सीने पर चलती दिखाई दी। वह अपने सीने पर वार करने ही वाला था कि किसान ने योद्धा का हाथ पकड़ लिया। योद्धा ने हाँफते हुए कहा- "हाँ, ये सच है.... सब से छोटा.... "

सभी चित्र - **विवेक वर्मा**

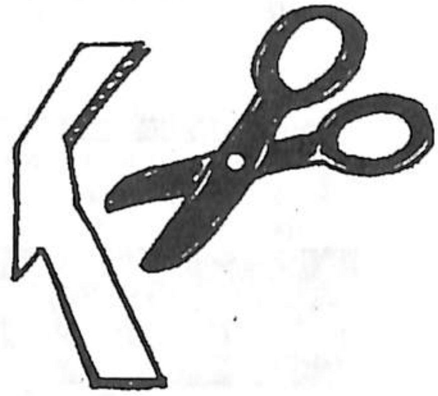
नटखट नट



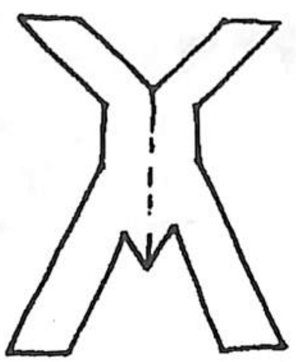
1. एक मोटा गत्ता लो। 7.5 सेंटीमीटर चौड़ा और 12.5 सेंटीमीटर लम्बा। चित्र में दिखाए अनुसार उसे बीच से मोड़ लो।



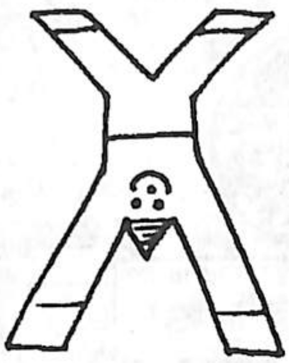
2. मुड़े हुए कागज़ पर नट बना लो।



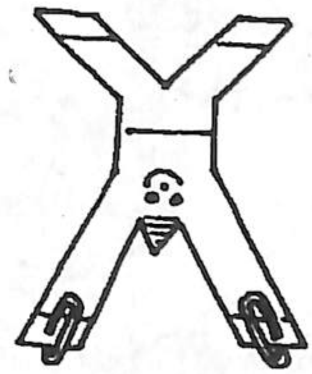
3. कैंची से काट लो। नट की बाहें लम्बी रखना।



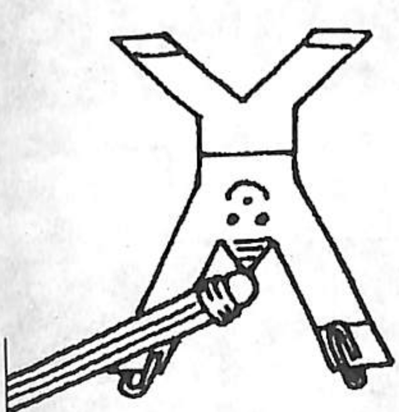
4. कागज़ को खोल लो। अगर कागज़ पर्याप्त मोटा न हो तो उसके पीछे मोटा कागज़ चिपका दो।



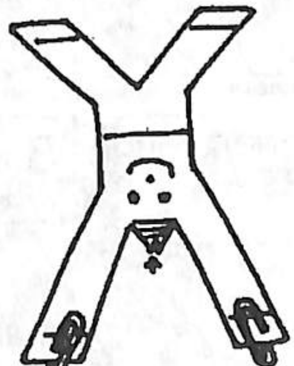
5. नट का चेहरा बनाकर उसमें रंग भर दो।



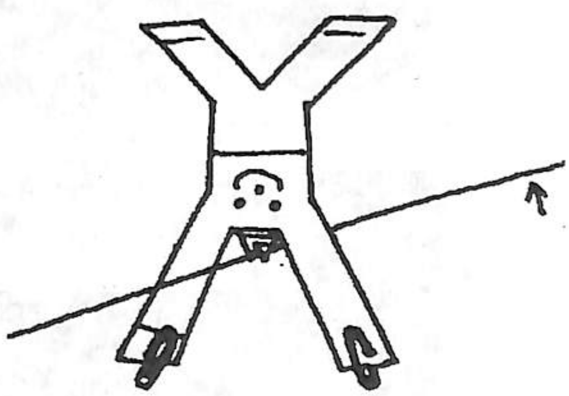
6. दोनों बाजुओं पर एक-एक क्लिप टाँग दो। अगर क्लिप में कोई सिक्का या कोई अन्य भारी चीज़ भी लगा पाओ तो अच्छा।



7. अपनी उँगली या पेंसिल पर इसका संतुलन बैठा कर देखो।



8. तनी हुई रस्सी पर खेल दिखाने के लिए नट की टोपी में छोटा-सा खाँचा बना लो।

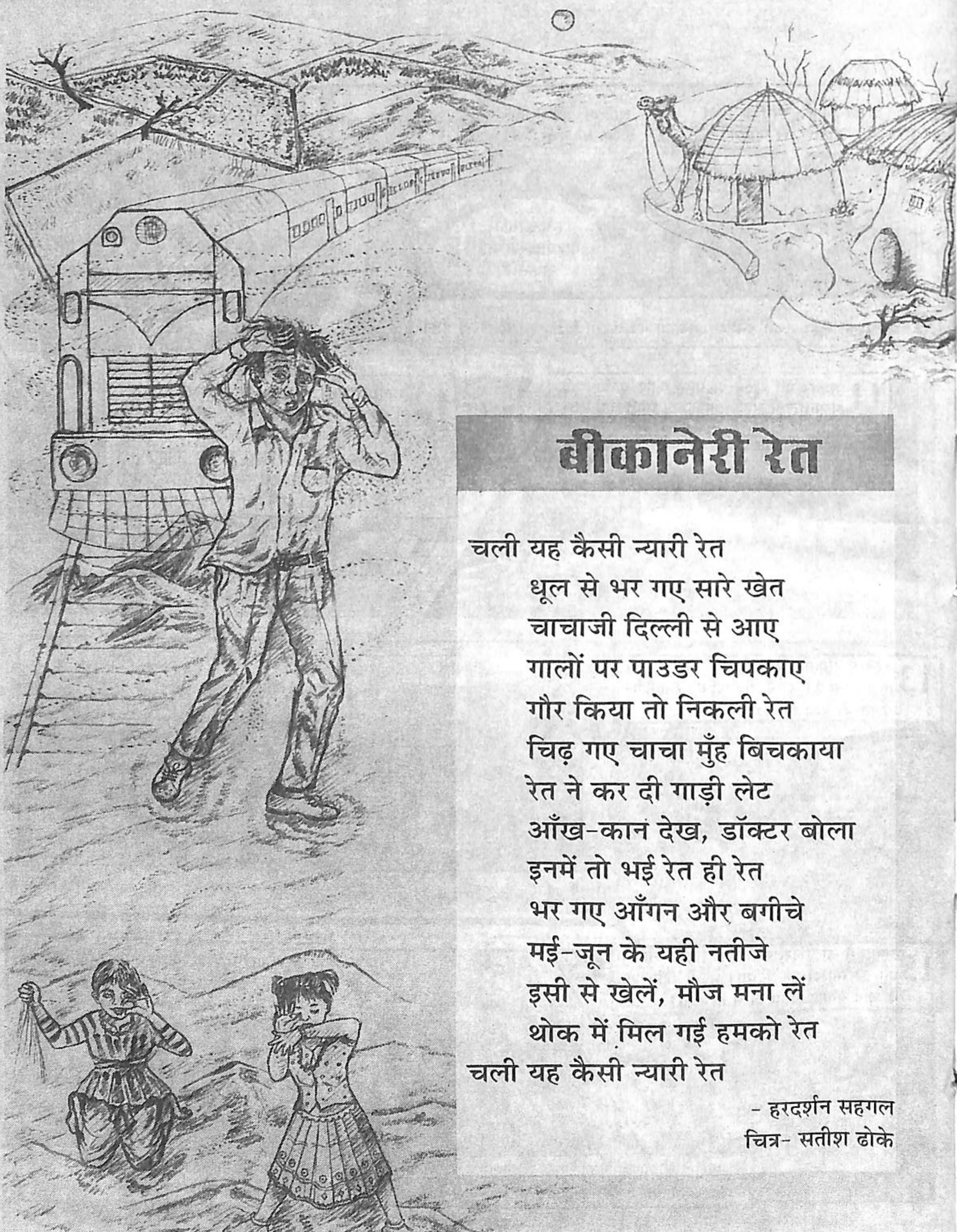


9. और अगर उसकी टोपी में एक घिरनी लगा दो तो उसे रस्सी पर सरपट दौड़ता पाओगे।



सूक्ष्मजीव की कहानी
1 ये छोटे-छोटे जीव कई तरह के होते हैं। कुछ जीव पनीर, दही और कई तरह की दवाएँ बनाने के काम आते हैं...
2 और कुछ हमें बीमार कर देते हैं।
3 इनके नाम में जुड़ा सूक्ष्म शब्द बताता है कि इन्हें बस सूक्ष्मदर्शी से ही देखा जा सकता है।
LEEUWENH
Amazing MICROSCO
VINEGAR
WINE
POND WATER
4 पहले इन्हें कोई नहीं जानता था। वो तो जब डेनमार्क के ल्यूवेंहॉक ने सूक्ष्मदर्शी से एक तालाब में देखा, तब इनका पता चला।
5 लेकिन लोग न माने। वे कहते कि खराब हुए खाने से सूक्ष्मजीव बनते हैं। न कि सूक्ष्मजीव खाना खराब करते हैं।
6 1700 के दशक में कारखानों, मशीनों की भरमार हुई। भीड़-भाड़ बढ़ी, गन्दगी बढ़ी। स्वास्थ्य की किसी ने परवाह न की।
7 19वीं शताब्दी में थियोडर सैचवान ने खमीर पर एक प्रयोग किया। और पाया...
अरे वाह!
यह ज़िन्दा है!
8 किसी ने उस पर विश्वास नहीं किया। सिवाए लुई पाश्चर के। लुई को उन दिनों एक काम भी सौंपा गया था...
...शराब क्यों खराब हुई...


शराब को बस गरम कर लो। सारे कीटाणु मर जाएँगे।
शुक्रिया, आपने मेरी शराब को बचा लिया
कोई मेरी शराब को उबालेगा नहीं...
हम इसको पाश्चीकरण कह सकते हैं
9 पाश्चर ने कहा - यह इन्हीं सूक्ष्मजीवों की करनी है कि शराब खराब हुई।
10 उसने यह भी पता लगाया कि कीटाणु ही रोग पैदा करते हैं। एक से दूसरे तक कीटाणु पहुँचे कि रोग भी पहुँचा।
11 पाश्चर की खोज से पहले और बाद में भी अस्पताल में साफ-सफाई का ध्यान नहीं रखा जाता था।
12 19वीं शताब्दी के मध्य में वियना के अस्पतालों में एक बात देखी गई। बच्चे पैदा होने के बाद कई माँओं को बुखार आता और उनकी मौत हो जाती। एक डॉक्टर इग्नाज़ फिलिप ने ध्यान दिया कि डॉक्टर हाथ धोए बगैर एक से दूसरे मरीज़ों को छूते थे। उसने कहा...
13 ...इससे संक्रमण एक से दूसरे मरीज़ तक पहुँच जाता है। उसने डॉक्टरों को संक्रमण-नाशक से हाथ धोने को कहा।
बकवास
गद्दार
हम हत्यारे नहीं हैं
14 यह लुई पाश्चर के काम से पहले की बात है। लोगों ने इसका जमकर विरोध किया।
15 1865 में डॉ. लिस्टर ने एक संक्रमणनाशक का इस्तेमाल शुरू किया। इससे ऑपरेशन के बाद बुखार आना खत्म हो गया।
सूक्ष्मजीवों को मार पाने की क्षमता से आधुनिक शल्य चिकित्सा का जन्म हुआ।
16 1882 में रॉबर्ट कूच ने पाश्चर के काम को आगे बढ़ाया। उन्होंने जीवों को अलग करने व उनकी वृद्धि करने के तरीके खोजे।
अलग करने के बाद इन सूक्ष्मजीवों को खत्म करने के तरीके भी खोजे गए।



बीकानेरी रेत

चली यह कैसी न्यारी रेत
धूल से भर गए सारे खेत
चाचाजी दिल्ली से आए
गालों पर पाउडर चिपकाए
गौर किया तो निकली रेत
चिढ़ गए चाचा मुँह बिचकाया
रेत ने कर दी गाड़ी लेट
आँख-कान देख, डॉक्टर बोला
इनमें तो भई रेत ही रेत
भर गए आँगन और बगीचे
मई-जून के यही नतीजे
इसी से खेलें, मौज मना लें
थोक में मिल गई हमको रेत
चली यह कैसी न्यारी रेत

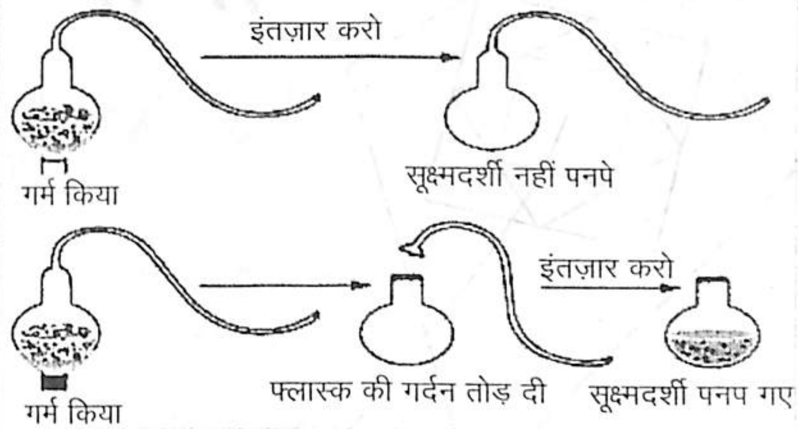
- हरदर्शन सहगल

चित्र- सतीश ढोके

गोबर से इल्ली...


लुई पाश्चर

बहुत पुरानी बात है। एक जाने-माने वैज्ञानिक थे हेलमॉन्ट। उनका मानना था कि अगर थोड़ा-सी चीज़, कुछ गंदे कपड़े और कुछ गेहूँ के दाने एक अंधेरे कोने में रख दें तो कुछ दिनों बाद वे चूहे बन जाएँगे।



यह भी माना जाता था कि मेंढक या तो बारिश के साथ टपकते हैं या कीचड़ से अपने आप बन जाते हैं। इल्लियाँ गोबर से बनती हैं और जूँ पसीने से।


फ्रांसेक्को रेडी

लेकिन कुछेक वैज्ञानिक इससे अलग सोचते थे। जैसे फ्रांसेक्को रेडी। 1668 में इन्होंने एक प्रयोग किया और बताया कि गोबर या माँस में इल्लियाँ अपने आप पैदा नहीं हो जातीं। ऐसा तभी होता है जब उसमें मक्खी के अंडे हों।

सूक्ष्मदर्शी ने समस्या को उलझाया

सूक्ष्मदर्शी की खोज के साथ ही सूक्ष्मजीवों की खोज हुई। एक बार फिर लोगों ने कहना शुरू किया कि इल्लियों की बात अलग है। लेकिन ये सूक्ष्मजीव तो अपने आप ही पैदा होते हैं।

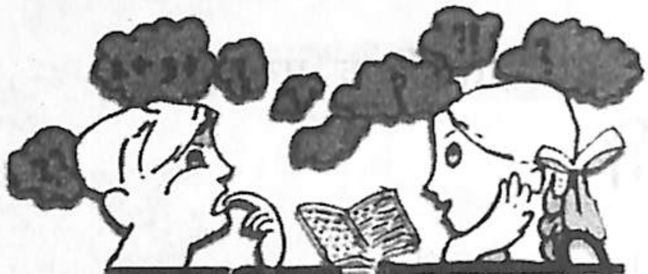
ऐसे में एक इतालवी वैज्ञानिक स्पैलेंज़िनी सामने आए। उन्होंने एक फ्लास्क में मुर्गे का शोरबा रखा और फिर फ्लास्क की सारी हवा निकालकर उसे सील कर दिया। देखा गया कि शोरबे में सूक्ष्मजीव पैदा नहीं हुए। लोगों ने कहा कि इससे तो सिर्फ इतना सिद्ध होता है कि हवा न हो तो जीव पैदा नहीं होते।

1858 में कई अवलोकनों व प्रयोगों के आधार पर एक जर्मन डॉक्टर रुडोल्फ विर्चाओ ने एक क्रांतिकारी सिद्धांत प्रस्तुत किया - सजीव से ही सजीव पैदा हो सकता है। इससे काफी खलबली मच गई। मामला इतना गर्म हो गया कि इसका निपटारा करनेवाले व्यक्ति को पुरस्कार देने की घोषणा कर दी गयी। अंत में लुई पाश्चर ने 1859 में इस विवाद का अंत किया।

पाश्चर ने दो फ्लास्क लिए। एक फ्लास्क की गर्दन सीधी थी जबकि दूसरे की गर्दन में दो मोड़ थे। इन दोनों में पोषक पदार्थ थे। दोनों को गर्म किया ताकि उनमें पहले से मौजूद जीवाणु मर जाएँ। इसके बाद दोनों को खुला छोड़ दिया गया। कुछ दिनों बाद देखा गया कि सीधी गर्दन वाले फ्लास्क में तो जीवाणु फलने-फूलने लगे थे मगर मोड़दार गर्दन वाले फ्लास्क में जीवाणु नहीं पहुँचे। क्योंकि वे गर्दन के मोड़ में उलझकर रह गए थे। इस आधार पर पाश्चर ने कहा कि जब तक हवा में मौजूद जीवाणु अंदर नहीं पहुँचते तब तक फ्लास्क के पोषक पदार्थों में जीवाणु नज़र नहीं आते हैं। लेकिन उनके विरोधी संतुष्ट नहीं हुए।

तब मोड़दार गर्दन वाले फ्लास्क की गर्दन तोड़कर उसे सीधा कर दिया गया। कुछ ही दिनों बाद उसमें भी जीवाणु फल-फूल रहे थे। तो आखिर साबित हुआ कि सजीव अपने आप पैदा नहीं होते।

मगर क्या तुम बता सकते हो कि मोड़दार गर्दन वाले फ्लास्क की गर्दन तोड़ने की क्या ज़रूरत थी और इससे क्या साबित हुआ?

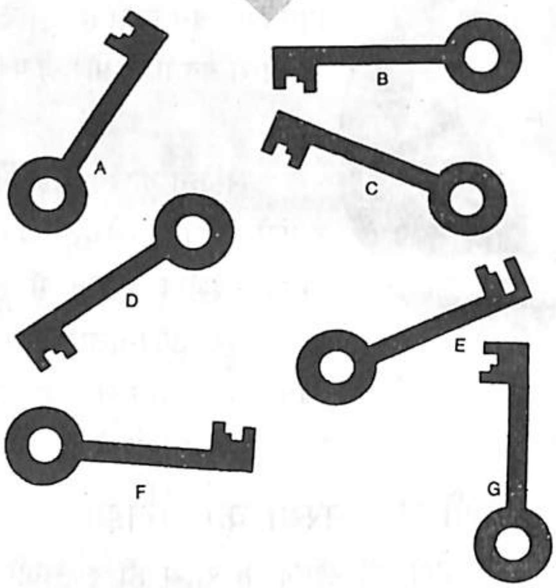


माथा पच्ची



अरे भाई पतंग भी उड़ा लेना। पहले एक माथापच्ची तो हल करो। माथापच्ची यह है कि क्या तुम इस पतंग और इससे लटक रहे गुब्बारे को पेंसिल से बना सकते हो। पर हाँ दो शर्तें भी हैं एक तो एक लाईन पर दुबारा नहीं जा सकते। दूसरे पतंग के बीच में जाकर ही लाइन खत्म होना चाहिए।

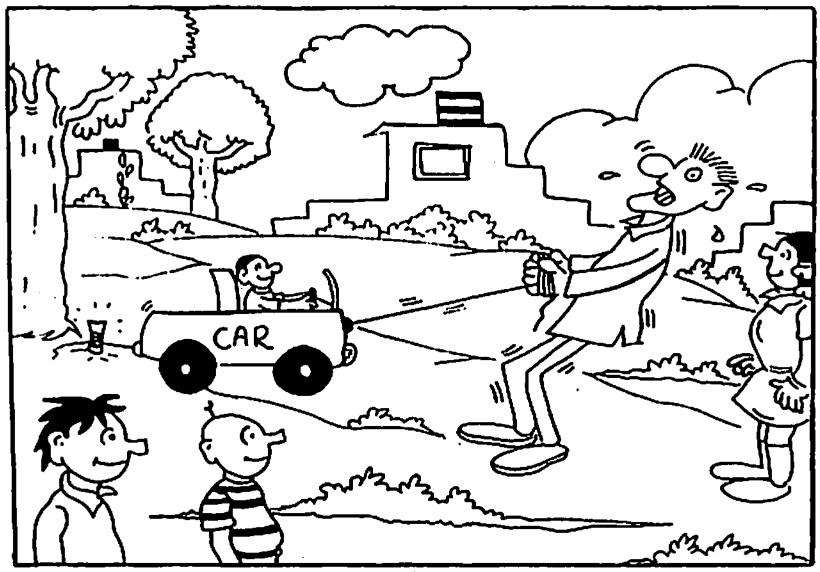
ये सात चाबियाँ हैं। इनमें से छह एक ही ताले की हैं। क्या तुम बता सकते हो कौन-सी एक चाबी अलग है?



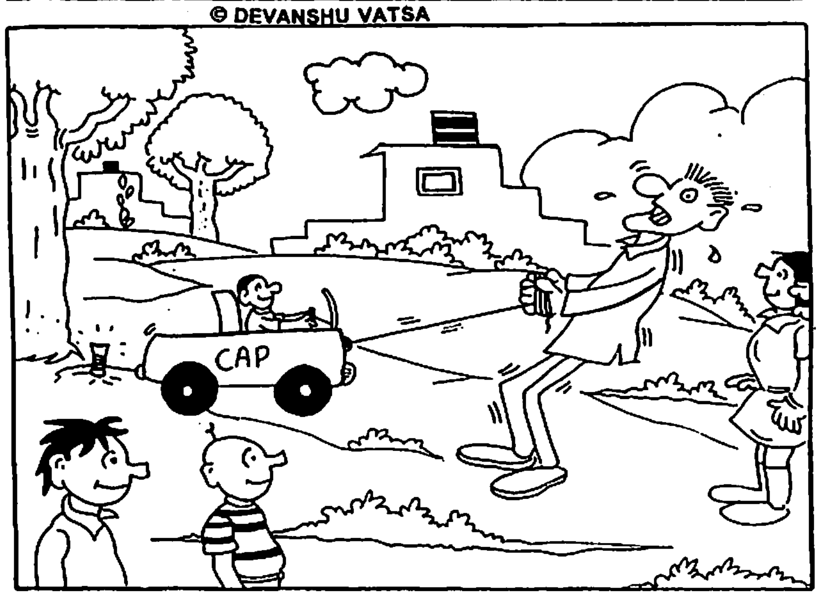
बिन्दुओं को मिलाकर ज़रा यह तो बताओ कि ये महाशय क्या उड़ा रहे हैं। और हाँ रंग भरना मत भूलना।



इन दो चित्रों में कम से कम आठ अंतर ढूँढो।



© DEVANSHU VATSA



इस आकृति में कुछ अंक भरे हैं। तुम्हें बस ज़रा-सी उठापटक करनी है। उठापटक करते समय बस इतना ध्यान रखना कि कोई दो अंक (चाहे सीधे, आड़े, टेढ़े कैसे भी देखें) क्रम से न आएँ।

	1	
2	3	4
5	6	7
	8	

यह एक नए तरह का जोड़ का सवाल है। इसमें अंक नहीं बल्कि अक्षरों को जोड़ा गया है।

$$
\begin{array}{r}
\text{BOYS} \\
+\ \text{BOYS} \\
\hline
\text{SILLY} \\
\hline
\end{array}
$$

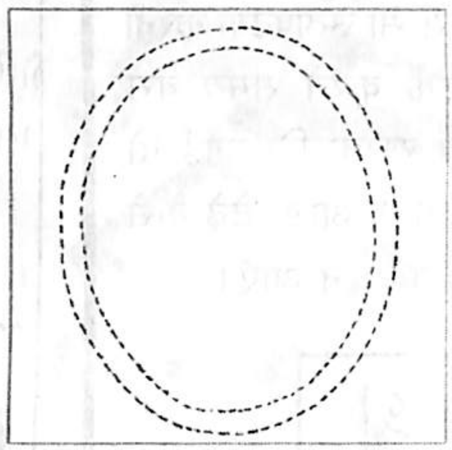
तुम्हें बताना है कि दिए गए अक्षर 0 से 9 के बीच के किस-किस अंक के बराबर हैं। कोई भी दो अक्षरों का एक समान अंक नहीं है। शुरू करने से पहले थोड़ी मदद हम कर देते हैं। यहाँ S = 1 है। और B = 6 है।

तुम भी बनाओ

मुखौटे

मुखौटे भी क्या कमाल की चीज़ होते हैं! इनकी मदद से जो चाहो वो रूप धर लो। इन्हें बनाना भी आसान। ज़रा-सी कलाकारी से एक से बढ़कर एक मुखौटे बनाए जा सकते हैं। एक ऐसा ही कमाल तुम भी कर सकते हो। तो शुरू करें...

तुम्हें जुटाना है- मोटे कागज़ का एक टुकड़ा, कैंची और सजाने का कुछ सामान।



कागज़ का इतना बड़ा टुकड़ा लेना जो तुम्हारे सिर पर आराम से आ सके। चलो एक अंदाज़ा लगाते हैं। चकमक से थोड़ा बड़ा कागज़ ले लो।

इस कागज़ को चित्र में दिखाए अनुसार गोलाई में काट लो।

लगभग एक इंच चौड़ी पट्टी के लिए इस तरह एक आउट लाइन बना लो।



मान लो हमें सींगों वाला मुखौटा बनाना है तो चित्र में दिखाए अनुसार सींग बना लो। सींग के नीचे यानी माथे वाला हिस्सा नहीं काटना।



अब रहा इसे सजाने का काम। तो इसमें तो तुम उस्ताद हो ही।

कुछ मज़ेदार मुखौटों के चित्र अगले पन्ने पर दे रहे हैं। उम्मीद है तुम बेहतरीन मुखौटे बनाओगे और उनसे खेलोगे।

- रश्मि निगम

चित्र- सतीश ढोके

मज़ेदार मुखौटे



चित्र — सतीश ढोके

चकमक पंजीयन क्रमांक 50309/85 के अंतर्गत भारत के समाचार पत्रों के रजिस्ट्रार द्वारा पंजीकृत। डाक पंजीयन क्रमांक म.प्र. /261/भोपाल/2003-05



आदिम आलम, चौथी, फ़ैज़ाबाद, उ.प्र.

रेक्स डी. रोज़ारियो की ओर से विनोद रायना द्वारा राजकमल प्रिंटर्स से मुद्रित एवं एकलव्य, ई-7/एच.आई.जी. 453, अरेरा कॉलोनी, भोपाल-16 से प्रकाशित। संपादक : विनोद